Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

जाजम बिछाई कूवा ऊपरें,
चिहुं कांनी मेल्यो उपर भार।
भोला वेंसे तिण उपरें,
ते डूब मरें रे तिण कूवा मझार।।

कुएं के ऊपर जाजम बिछाई हुई है। उसके चारों कोनों पर भार रखा हुआ है। भोला आदमी उस पर बैठ जाता है। कुएं में गिर डूबकर मर जाता है।
– आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 26 • अंक 23 • 10 मार्च - 16 मार्च, 2025 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 08-03-2025 • पेज 12 ₹ 10 रुपये

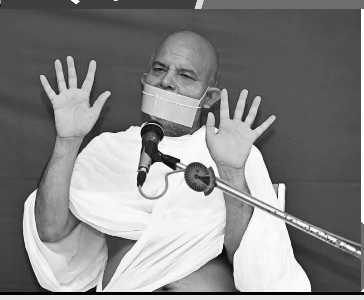

लोभ को कम कर जीवन को बनाएं सार्थक : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02

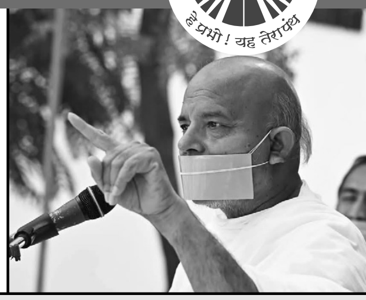

अकाम और शल्य रहित होने का करें प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 11

Address Here

व्यवहार में रहे निरहंकारिता और विनयभाव : आचार्यश्री महाश्रमण

पंद्रह दिवसीय प्रवास हेतु हुआ पूज्यप्रवर का गांधीधाम में मंगल प्रवेश

गांधीधाम।
05 मार्च, 2025

भगवान महावीर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ गांधीधाम में स्थित अमर पंचवटी में पंद्रह दिवसीय प्रवास हेतु पधारे। महावीर आध्यात्मिक समवसरण में मंगल देशना प्रदान करते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि मनुष्य के जीवन में व्यवहार कुशलता और आध्यात्मिकता दोनों आवश्यक हैं।

अहंकार एक ऐसा तत्व है, जो हमारे व्यवहार को दूषित कर सकता है। विनय से विद्या शोभित होती है, क्योंकि अहंकार और विनय में शत्रुता होती है। शास्त्रों में कहा गया है कि यदि किसी को विनय की प्रेरणा दी जाए और वह व्यक्ति इस प्रेरणा को ग्रहण करने के बजाय कुपित हो जाए, तो वह अपने ही अहित का कार्य करता है। यह वैसा ही है जैसे आती हुई लक्ष्मी को डंडे से पीटना।

जो लोग अहंकारी, उच्छृंखल या घमंडी होते हैं, वे दुखी जीवन जीते हैं, जबकि सुविनीत व्यक्ति सुखी रहते हैं। देव जगत में भी सुविनीत देवता आनंदित होते हैं, जबकि अविनीत आत्माएं दुखी रहती हैं। हमें अपने व्यवहार में निरहंकार रहना चाहिए और बड़ों के प्रति सदैव विनयभाव रखना चाहिए। हमें ज्ञान, धन और बल का अहंकार नहीं करना चाहिए। सत्ता हमें सेवा के लिए प्राप्त होती है, इसलिए उसका सदुपयोग करना चाहिए। अभिमान मदिरापान के समान है, जो विवेक को नष्ट कर सकता है।

हर पदार्थ का एक विशेष महत्व होता है। हमें अपने भीतर यह देखना चाहिए कि कौन-सी चीज़ अनावश्यक है और उसे त्यागना चाहिए। ज्ञान का अहंकार हमारे व्यवहार और चिंतन में नहीं आना चाहिए, क्योंकि यह आत्मा के लिए अवांछनीय है। जहाँ झुकने की आवश्यकता होती है, वहाँ अहंकार का त्याग करना चाहिए। कहा गया है कि अभिवादनशील व्यक्ति के चार गुणों में वृद्धि होती है - आयुष्य, विद्या, यश और बल। हमें अहंकार से मुक्त रहकर अपने व्यवहार को उत्कृष्ट बनाना चाहिए।

पूज्यप्रवर ने गांधीधाम पदार्पण के अवसर पर फरमाया कि 2013 में भी यहाँ आगमन हुआ था। यहाँ अनेक जैन समाज के लोग रहते हैं। चाहे जैन हो या अजैन, यदि कोई व्यक्ति 'गुडमैन' है, तो वह उत्तम है। (शेष पेज 10 पर)

वैर से नहीं समता और सहिष्णुता से संभव है शांति : आचार्यश्री महाश्रमण

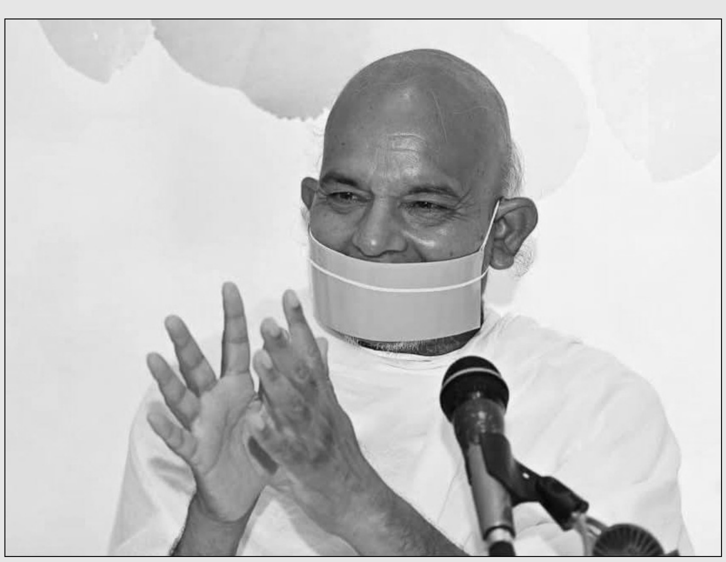

वसही।
02 मार्च, 2025

जिनशासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमणजी का वसही के भद्रेश्वर जैन तीर्थ में पदार्पण हुआ। अमृत देशना प्रदान करते हुए परम पूज्य ने फरमाया कि क्षमा एक धर्म है। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपनी अवहेलना करने वाले के प्रति क्षमा का भाव बनाए रखना एक साधना है। जब अहंकार पर चोट पड़ती है और फिर भी मन शांत बना रहता है, तो यह समता की साधना हो जाती है।

जिसके पास क्षमा धर्म है, उसका कोई क्या बिगाड़ सकता है? जिसके हाथ में क्षमा रूपी खड्ग है, उसे दुर्जन क्या हानि पहुँचा सकता है? जैसे सूखी घास में आग लग सकती है, लेकिन सूखी मिट्टी पर डाली गई आग कुछ ही देर में बुझ जाती है, वैसे ही यदि कोई कितना भी कटु बोले और सामने से कोई उत्तर न मिले, तो वह विवाद समाप्त हो जाता है। 'मैं सबको क्षमा करता हूँ, सब मुझे क्षमा करें'—यह समानता का आदर्श बन जाता है।

सभी प्राणियों के प्रति मैत्री भाव रखना और किसी से बैर-द्वेष न रखना एक उच्च आध्यात्मिक विचारधारा है। ईंट का जवाब पत्थर से देने के बजाय पुष्पों से देना ही सच्चा अध्यात्म है। जहाँ धर्म है, वहाँ क्षमा और शांति को ही लक्ष्य बनाया जाना चाहिए। यदि हम क्षमा भाव में रहेंगे, तो एक दिन सामने वाला भी क्षमा के भाव में आ सकता है। वैर से वैर शांत नहीं होता, बल्कि समता और सहिष्णुता से ही शांति संभव है।

परिवार, समाज, संगठन और समूह में न्याय, नीति और सौहार्द बना रहना चाहिए। सौहार्द ही सशक्त समाज का आधार है।

(शेष पेज 10 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
10 मार्च - 16 मार्च, 2025

लोभ को कम कर जीवन को बनाएं सार्थक : आचार्यश्री महाश्रमण

मुंद्रा।
28 फरवरी, 2025

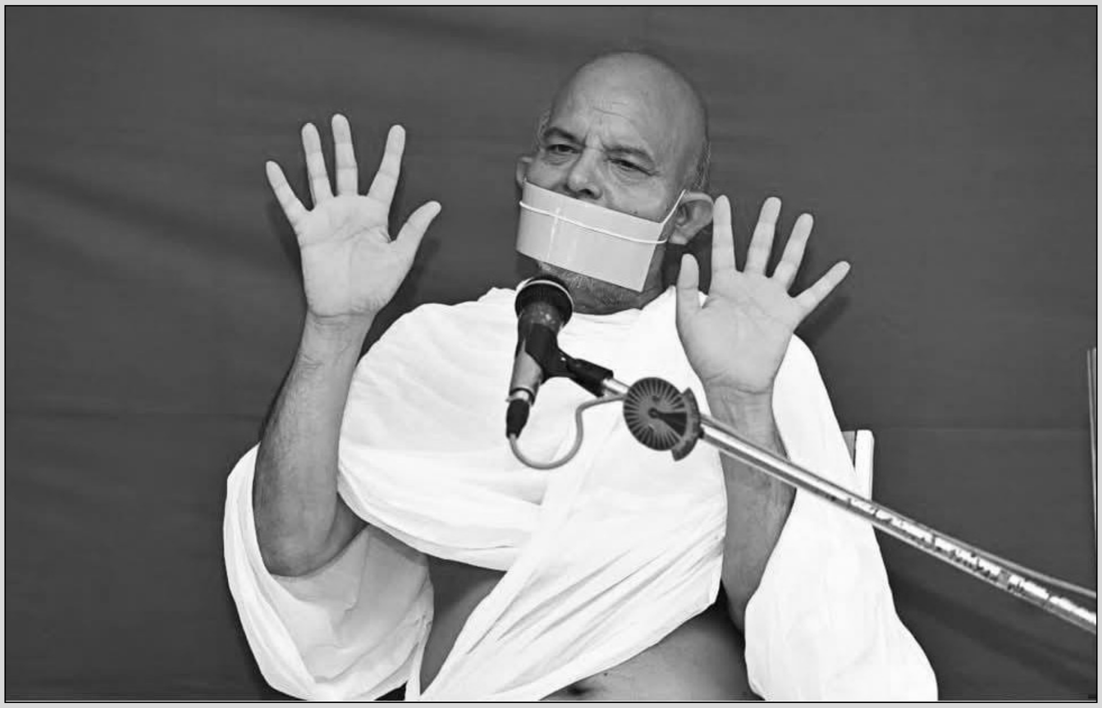

अहिंसा यात्रा के प्रवर्तक आचार्यश्री महाश्रमणजी प्रातः लगभग 12 किलोमीटर का विहार कर मुंद्रा के आर्ट्स एंड कॉमर्स कॉलेज में प्रवास हेतु पधारे। पावन उपदेश प्रदान करते हुए युगदृष्टा ने कहा कि हमारी आत्मा अनंत काल तक संसार में भ्रमण कर रही है। यह निरंतर जन्म-मरण का चक्र क्यों चल रहा है? यह विचारणीय प्रश्न है। यह चक्र—जन्म, मरण, पुनर्जन्म—अविरल रूप से चलता आ रहा है।

इस जन्म-मरण के चक्र का मुख्य कारण आत्मा के भीतर विद्यमान कषाय हैं। कर्म, जो आत्मा को संचालित करता है, उसे नित नए जन्मों में भेजता रहता है। इन कषायों में से प्रमुख कषाय है—लोभ। जैन वांग्मय में चार संज्ञाएँ बताई गई हैं—मैथुन, आहार, भय और परिग्रह। इनमें परिग्रह संज्ञा लोभ से संबंधित है।

लोभ एक गहरी जड़ें जमाने वाला कषाय है। अन्य तीन कषाय यदि शांत भी हो जाएँ, तो भी लोभ दसवें गुणस्थान तक बना रहता है। यह एक ऐसी प्रवृत्ति है, जो अन्य कषायों को भी पोषण देती है। यहाँ तक कि साधुओं में भी छठे गुणस्थान तक लोभ उभर सकता है। गृहस्थों में तो स्वाभाविक रूप से परिग्रह और लोभ की प्रवृत्ति पाई जाती है, बस उसकी तीव्रता भिन्न हो सकती है। गृहस्थ जीवन में परिग्रह स्वाभाविक रूप से होता है, जबकि साधु अणगार होते हैं—वे संयोगों से विमुक्त रहते हैं। यही गृहस्थ और साधु के बीच का सबसे बड़ा अंतर है। गृहस्थ सांसारिक संबंधों से बंधे होते हैं, जबकि साधु संबंधातीत चेतना में स्थित होते हैं।

स्वेच्छा से भोगों का त्याग करना ही सच्चे त्यागी की पहचान है। साधुओं में अलोभ चेतना प्रकट होनी चाहिए और गृहस्थों में भी लोभ की प्रवृत्ति न्यूनतम होनी चाहिए। इच्छाओं का सीमाकरण आवश्यक है। श्रावकों के व्रत संयम को दृढ़ बनाने वाले होते हैं।

ज्ञान के साथ संस्कारों का भी विकास होना चाहिए। विद्यार्थियों को कॉलेज से केवल नॉलेज ही नहीं, बल्कि संस्कारयुक्त आचरण की शिक्षा भी प्राप्त होनी चाहिए। अहिंसा और संयम के साथ आध्यात्मिक सेवा की भावना भी विकसित होनी चाहिए। जीवन में कदाचार न होकर सदाचार का वास हो। भ्रष्टाचार के स्थान पर शिष्टाचार को प्राथमिकता मिले। हमारे जीवन में लोभ अतिरेक न बने, बल्कि नियंत्रित रहे। जीवन में अलोभ की चेतना जागे। गृहस्थ के लिए इच्छा परिमाण, भोगोपभोग परिमाण व्रत की बात आती है। पूरा नहीं तो उपभोग का अल्पीकरण तो करे। लोभ को कम कर व्यक्ति अपने जीवन को सार्थक बना सकता है।

बाईसवां बोल : श्रावक के 12 व्रत

1. अहिंसा अणुव्रत
2. सत्य अणुव्रत
3. अस्तेय अणुव्रत
4. ब्रह्मचर्य अणुव्रत
5. अपरिग्रह अणुव्रत
6. दिग् परिमाण व्रत
7. भोगोपभोग परिमाण व्रत
8. अनर्थदंड विरमण व्रत
9. सामायिक व्रत
10. देशावकाशिक व्रत
11. पौषधोपवास व्रत
12. यथासंविभाग व्रत

कार्यक्रम में आचार्य प्रवर ने कॉलेज के विद्यार्थियों को सद्भावना, नैतिकता एवं नशामुक्ति के संकल्प स्वीकार करवाए। स्वागत के क्रम में मुंद्रा नगरपालिका की मेयर रचना जोशी ने अणुव्रत अनुशास्ता का अभिनंदन किया। समस्त जैन समाज की ओर से भोगीलाल भाई मेहता, कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. फफल शाह ने विचारों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

भोग से नहीं, त्याग से होती है तृप्ति : आचार्यश्री महाश्रमण

देशलपुर कंठी।
26 फरवरी, 2025

तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमणजी 12 किलोमीटर का विहार कर देशलपुर कंठी में स्थित पंचायत प्राथमिक ग्रुप स्कूल में पधारे। आध्यात्मिक प्रशिक्षण प्रदान कराते हुए अध्यात्म पुरूष ने फरमाया कि दो शब्द है - एक है भोग और दूसरा है योग। भोग और योग दोनों में विपरीतता भी है। भोग व्यक्ति को बन्धन से बान्धने वाला होता है वही योग व्यक्ति को मुक्ति की दिशा में ले जाने वाला, मुक्त कराने वाला होता है।

भोग को अधर्म और त्याग को धर्म कहा गया है। योग भी धर्म है। मोक्ष का उपाय योग है। वह ज्ञान रूप, श्रद्धा रूप और चारित्र रूप होता है। ज्ञान, दर्शन, चारित्र की साधना योग होती है। मोक्ष से आत्मा को जोड़ने वाली सारी धर्म की प्रवृति योग होती है। भोगासक्त व्यक्ति कर्मों से चिपक जाता है जैसे श्लेष्म से मक्खी। पहले व्यक्ति भोग भोगता है, फिर मानो भोग व्यक्ति को भोगने लग जाते हैं।

अध्यात्म की साधना में खुद की आत्मा को साध लें। खुद की इन्द्रियों का वशीकरण कर लें। आसक्तिजनक भोगों में जो डूबा हुआ है, मोक्ष से विपरीत भावना वाला है वह बाल, मन्द और मूढ़ है।

हमें पदार्थों का उपभोग करना पड़ता है पर उसमें आसक्ति न हो। संयम, सादगी और संतोष रखें। धर्म ध्यान करें, सेवा का कार्य करें। भोग का सीमाकरण करें। आवश्यकता की तो पूर्ति हो सकती है पर इच्छाएं तो असीमित होती हैं, इच्छाओं का परिसीमन करें।

साधु का जीवन तो संयममय ही होना चाहिए। साधु हो या गृहस्थ रास्ता तो एक ही है। धीरे-धीरे त्याग की तरफ आगे बढ़ना चाहिये। पूज्यवर के स्वागत में जिनेश भाई मेहता एवं प्राथमिक शाला के आचार्य नारायण भाई गढ़वी ने अपनी श्रद्धा-भक्ति अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

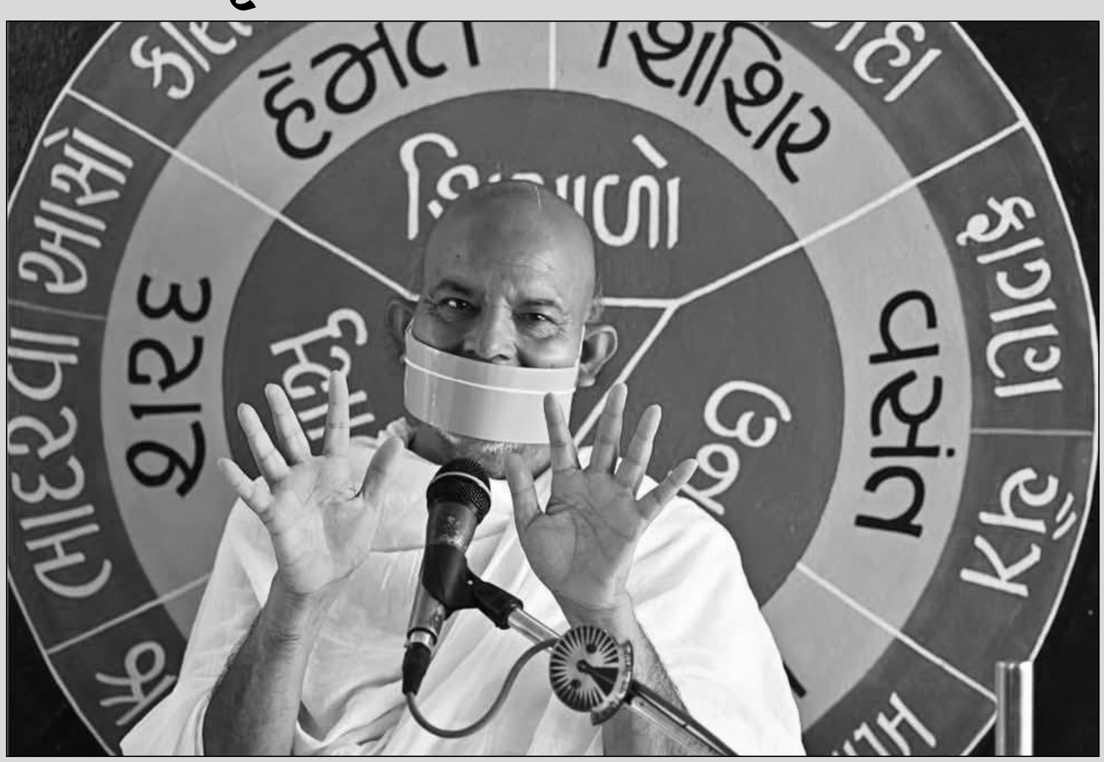

महावीर की अमृतवाणी को जन-जन तक पहुंचाना जरूरी

नई दिल्ली।

महरौली स्थित तेरापंथ भवन कालूकुंज में अमृतवाणी कार्यालय के उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए 'शासनश्री' साध्वी सुव्रतांजी ने कहा कि भगवान महावीर के अहिंसा, अनेकांत, सहअस्तित्व एवं शांति के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने की आज सर्वाधिक आवश्यकता है।

आज का मनुष्य तनाव, अशांति, आतंकवाद एवं हिंसा के माहौल में जीवन जी रहा है, और ऐसे समय में महापुरुषों की वाणी ही शांति, संतुलन एवं सुख का माध्यम बन सकती है। जैन तीर्थंकरों के साथ-साथ आचार्यों एवं मुनिजनों के उपदेश शांतिपूर्ण जीवन का आधार हैं।

साध्वीश्री ने कहा कि आचार्य श्री तुलसी, आचार्य श्री महाप्रज्ञ एवं वर्तमान आचार्य श्री महाश्रमण तथा तीर्थंकरों की वाणी को संचार माध्यमों द्वारा देश और दुनिया में पहुंचाने के उद्देश्य से अमृतवाणी संस्था एक अनूठा कार्य कर रही है।

समारोह की अध्यक्षता जैन विश्वभारती के उपाध्यक्ष पन्नालाल बैद ने की, जबकि समारोह के विशिष्ट अतिथि जोधराज बैद थे। अमृतवाणी पिछले चार दशकों से तीर्थंकरों के उपदेशों एवं आचार्यों की वाणी को विभिन्न टीवी चैनलों एवं यूट्यूब के माध्यम से प्रतिदिन देश और दुनिया में प्रसारित करने का उल्लेखनीय कार्य कर रही है। अब तक इसका प्रधान कार्यालय लाडनूं, राजस्थान में था, जिसे अब दिल्ली में स्थापित किया गया है।

अमृतवाणी के संरक्षक सुखराज सेठिया ने संस्था का परिचय प्रस्तुत करते हुए समाजभूषण जेसराज सेखानी की उल्लेखनीय सेवाओं का उल्लेख किया। उन्होंने बताया कि अमृतवाणी आचार्यों की वाणी को संरक्षित, सुरक्षित और संप्रेषित करने का कार्य कर रही है। इस अवसर पर पन्नालाल बैद ने कहा कि आज के संचार युग में गुरुओं की वाणी को देश और दुनिया में पहुंचाकर अमृतवाणी ने एक महाक्रांति घटित की है। यह संस्था एक छोटे बीज से वटवृक्ष बनकर आधुनिक जीवन में धर्म को स्थापित करने का महान कार्य कर रही है। कार्यक्रम का संयोजन संदीप डूंगरवाल ने कुशलता से किया। इस अवसर पर संस्था के अध्यक्ष ललित दूगड़ एवं महामंत्री अशोक पारख ने जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा दिल्ली को कार्यालय का स्थान प्रदान करने के लिए आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर अमृतवाणी को उल्लेखनीय सेवाएं देने वाले कार्यकर्ताओं का अभिनंदन भी किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में साध्वी कार्तिकप्रभाजी एवं साध्वी चिंतनप्रभाजी ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। आभार ज्ञापन दिल्ली सभा के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत ने किया।

समारोह से पूर्व जैन संस्कार विधि से संस्कारक सुशील डागा एवं सुशील बैंगानी ने उद्घाटन प्रक्रिया संपन्न कराई। इस समारोह में देश के विभिन्न भागों से विशिष्ट व्यक्तियों ने भाग लिया। समारोह के पश्चात शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के समाधि स्थल वात्सल्य पीठ पर सभी ने मंगल पाठ सुनकर अमृतवाणी कार्यालय के लिए शुभकामनाएं व्यक्त कीं।

समारोह में संपतमल नाहाटा, गोविंद बाफना, जसराज मालू, सुशील कुहार, अमरचंद कुंडलिया आदि की विशेष उपस्थिति रही।

तपस्या से होती है आत्मा की शुद्धि

गंगाशहर।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी के सान्निध्य में मुनि नमि कुमार जी के 39 उपवास की तपस्या पूर्ण करने पर तप अनुमोदन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुनि नमि कुमार जी ने गीतिका के माध्यम से अपने भाव प्रकट करते हुए कहा कि आचार्य श्री महाश्रमण जी के संदेश से इतनी ऊर्जा प्राप्त हुई कि 29 उपवास करने वाले संत ने 39 उपवास की कठिन तपस्या पूर्ण कर ली।

मुनि कमल कुमार जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि तपस्या से कर्मों की निर्जरा होती है, जिससे आत्मा शुद्ध होती है। उन्होंने मुनि नमि कुमार जी की तपस्या को लक्ष्यबद्ध बताते हुए कहा कि उन्होंने अपने सभी सामाजिक दायित्वों को पूर्ण कर, एक भरी-पूरी गृहस्थी और मायामोह को त्यागकर दीक्षा ग्रहण की थी। दीक्षा के पश्चात् वे निरंतर कठोर तपस्याएं कर रहे हैं।

मुनि श्रेयांश कुमार जी ने 5 उपवास की तपस्या कर मुनि नमि कुमार जी का अभिनंदन किया। मुनि विमलबिहारी जी ने तप अनुमोदना करते हुए कहा कि तपस्या से शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य बना रहता है तथा मनोबल दृढ़ होता है। उन्होंने कहा कि तपस्या आत्मिक शुद्धि और कर्म निर्जरा के लिए अत्यंत लाभकारी है। मुनि प्रबोध कुमार जी ने तपस्या की अभ्यर्थना करते हुए कहा कि जीवन को पावन और पवित्र बनाने का मार्ग संयम और निर्जरा है, जो मोक्ष-मार्ग की दो प्रमुख पटरियां हैं। उन्होंने निर्जरा के 12 भेदों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि अनशन इसका प्रथम भेद है। उन्होंने यह भी कहा कि अपने लक्ष्य की प्राप्ति ही सर्वोत्तम तपस्या है।

कार्यक्रम में मुनि मुकेश कुमार जी ने कहा कि आज के समय में, जब नवकारसी और पौरसी जैसी छोटी तपस्याएँ भी कठिन मानी जाती हैं, तब मुनि श्री द्वारा 39 उपवास की तपस्या करना पूरे संघ के लिए गौरव का विषय है। उन्होंने तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी साधुओं की परंपरा का उल्लेख करते हुए कहा कि तपस्या से कर्मों की निर्जरा होती है और यह मोक्षगामी बनने में सहायक है।

स्वयं मुनि नमि कुमार जी ने अपनी तपस्या को गुरुदेव का आशीर्वाद बताते हुए कहा कि ⸢तप में आगे बढ़ते रहो⸥— इस दिव्य संदेश ने उन्हें प्रेरित किया। उन्होंने अपने अग्रणी उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी की प्रेरणा को अपनी तपस्या की आधारशिला माना। साथ ही, उन्होंने सभी संतों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा कि सभी ने उनका ध्यान रखा और उन्हें पूरा सहयोग दिया।

इस अवसर पर प्राप्त संदेशों का वाचन किया गया, जिसमें हंसराज डागा ने आचार्य श्री महाश्रमण जी का, जैन लूणकरण छाजेड़ ने मुनि अमन कुमारजी का और जतनलाल संचेती ने मुनि सुमति कुमार जी के भावों को प्रस्तुत किया। साध्वी विनम्रयशा जी के भी उद्गार प्राप्त हुए। तप अनुमोदन कार्यक्रम के दौरान शांतिनिकेतन प्रवचन पंडाल में सैकड़ों श्रद्धालुओं ने सामायिक के बेले की साधना कर इस पावन अवसर पर अपनी श्रद्धा व्यक्त की।

गुरु संदेश है अक्षय ऊर्जा का छत्र

टैगोर नगर, जयपुर।

विदेश यात्रा के लक्ष्य के साथ विहाररत मुनि अभिजीत कुमार जी एवं जयपुर में प्रवासित साध्वी अणिमाश्रीजी ठाणा-5 का टैगोर नगर में करणीदान, उदित सेठिया के नवनिर्मित निवास में आध्यात्मिक मंगल मिलन हुआ। मिलन के इस नयनाभिराम नजारे को देखकर परिषद भाव विभोर हो गई। जब मुनिश्री पूज्यप्रवर के हाथों से लिखित पत्र साध्वीश्री को उपहृत करने लगे तो साध्वीश्री ने खड़े होकर परम आदर के साथ उसे शिरोधार्य कर कहा- यह सिर्फ कागज का पत्र नहीं हमारे लिए तो यह अक्षय ऊर्जा का छत्र है।

मुनि अभिजीत कुमार जी ने कहा परम पूज्य गुरुदेव के मंगल आशीर्वाद एवं दिव्य ऊर्जा से एक मिशन के साथ हमने यात्रा प्रारंभ की है। पूज्यप्रवर की शक्ति हमारी भक्ति को अभिवर्धित कर रही है। हम अपनी साधना के साथ जीवन के एक-एक पल को संघ प्रभावना में योजित करें, यही हमारा परम लक्ष्य है। यात्रा करते-करते आज हम जयपुर पहुंच कर धर्मसंघ की प्रबुद्ध साध्वी साध्वी अणिमाश्रीजी के दर्शन पाकर प्रमुदित हैं। मुम्बई में भी हमारा अनेक बार साध्वीश्री से मिलना हुआ है। ऐसा लगता है आज हम अपने नातीले महाराज से मिले हैं। साध्वीश्री की साधना, क्षेत्र संभाल अनुकरणीय है एवं प्रवचन शैली बेजोड़ है। आपके कर्तृत्व की अनुगूंज केन्द्र में भी है। आपके मेनेजमेन्ट व डिसीप्लिन की चर्चा हर जगह सुनते हैं। दिल्ली में संघ प्रभावक कार्यक्रम आपने किए हैं। आप जहां भी जाती हैं वहां के दिल में स्थान बना लेती हैं। आप हमें ऐसा मार्गदर्शन दें कि हम भी संघ प्रभावना की श्रृंखला में जुड़ जाए। साध्वी अणिमाश्रीजी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति देते हुए कहा आज हमारे ऊपर अमृत बूंदों की बरसात हुई है। पूज्य प्रवर का अमृत संदेश हमारे भीतर अमृत कणों का संचार कर रहा है। यूं तो पूज्य प्रवर के समय-समय पर अनेक संदेश प्राप्त हुए हैं पर पूज्य प्रवर के करकमलों से लिखित पत्र मुनि प्रवर लेकर पधारे हैं। यह हमारे लिए अनमोल उपहार है। सचमुच मुनिश्री प्रभु के संदेशवाहक बनकर आए हैं। मुनिश्री अभिजीत कुमार जी एवं मुनि जागृत कुमार जी ने प्रोफेसर मुनि महेन्द्रकुमार जी स्वामी से ज्ञान मणियों को बटोरा है।

मुनिश्री ने उनकी जीवन वाटिका को संस्कारों से सरसब्ज बनाया है। दोनों प्रतिभाशाली संत हैं। संघ निष्ठा, आचार निष्ठा एवं मर्यादा निष्ठा के गहरे संस्कार हैं। आप पूज्यप्रवर के आशीर्वाद से सुदीर्घ यात्रा पर जा रहे हैं। आप धर्मसंघ में नया कीर्तिमान गढ़ें, नए इतिहास का सृजन करें, संघ प्रभावना में चार चांद लगाए। पूज्यप्रवर की दृष्टि से नई सृष्टि का निर्माण करें। जिनशासन एवं तेरापंथ संघ के गौरव को शतगुणित करें। मुनि जागृतकुमारजी ने कहा - साध्वीश्री की स्माइल, मेंनेजमेन्ट पावर व माईण्ड पावर गजब का है। साध्वी कर्णिकाश्री जी, डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी, साध्वी समत्वयशाजी एवं साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने मुनिश्री की अगवानी में 'मैं प्रभुवर रो संदेशो लायो जी' गीत का संगान किया। शाहदरा सभा के पूर्व अध्यक्ष पन्नालाल बैद, विजय चोपड़ा, सरला बैद एवं विजया छल्लाणी ने अपने भावों की प्रस्तुति दी।

77वें अणुव्रत स्थापना दिवस का आयोजन

दावणगिरी।

डॉ. मुनि पुलकित कुमारजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, दावणगिरी में अणुव्रत का 77वां स्थापना दिवस कार्यक्रम उत्साह के साथ मनाया गया। डॉ. मुनि पुलकितकुमारजी ने इस अवसर पर कहा अणुव्रत पतित को पवन बनता है। मानव में मानवता के संस्कार जगाता है। अणुव्रत प्रणेता आचार्यश्री तुलसी का अणुव्रत आंदोलन आज भी दिशा बोध देने का कार्य कर रहा है। नचिकेता मुनि आदित्य कुमारजी ने गीत एवं वक्तव्य के माध्यम से अणुव्रत का महत्व प्रकट किया। कार्यक्रम का प्रारंभ मुनिश्री द्वारा महामंत्र उच्चारण से हुआ। स्वागत भाषण सभा अध्यक्ष रतनचंद कोठारी ने किया। तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष कुणाल पोकरणा तथा तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम से अंकित बेगवानी ने विचार रखे। अणुव्रत गीत के माध्यम से तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष सुधा कोठारी के साथ सदस्याओं ने मंगलाचरण किया। कार्यक्रम का संचालन महेंद्र कोठारी ने किया।

इस अवसर पर मुनिश्री ने सभी श्रावक श्राविकाओं को ज्यादा से ज्यादा अणुव्रती बनाने की प्रेरणा दी।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
10 मार्च - 16 मार्च, 2025

संक्षिप्त खबर

ज्ञानशाला तथा जैन विद्या पुरस्कार वितरण समारोह

कांटाबांजी। स्थानीय तेरापंथ भवन में वर्ष 2024 हेतु ज्ञानशाला का पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम तेरापंथ सभा अध्यक्ष युवराज जैन, महिला मंडल अध्यक्षा आशा जैन, तेयुप अध्यक्ष विकास जैन और जैन विद्या, प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान की ओडिशा प्रभारी ममता जैन की उपस्थिति में प्रारंभ हुआ। ज्ञानार्थियों द्वारा मंगलाचरण के पश्चात सभा अध्यक्ष ने सभी का स्वागत किया। मुख्य प्रशिक्षिका सपना जैन ने ज्ञानशाला के विभिन्न आयामों पर प्रकाश डाला। नन्हे ज्ञानार्थी रेहांस, अक्षत और हिमांशी ने अपनी भावाभिव्यक्ति प्रस्तुत की। आशा जैन और विकास जैन ने बच्चों का मार्गदर्शन किया, जबकि ममता जैन ने दीर्घ श्वास जैसी तकनीकों के माध्यम से परीक्षा के तनाव को कम करने के प्रयोग करवाए। सभी वर्गों के श्रेष्ठ ज्ञानार्थियों के अलावा अनुशासन, गणवेश, उपस्थिति और सक्रिय अभिभावकों को भी विशेष पुरस्कार प्रदान किए गए। जैन विद्या में 'विज्ञ' उपाधि प्राप्त बहनों तथा भाग 1 से भाग 5 में अखिल भारतीय स्तर पर वरीयता प्राप्त भाई-बहनों को सभा और महिला मंडल की ओर से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन ज्ञानशाला संयोजिका स्मिता जैन ने किया।

निःशुल्क मधुमेह व ब्लड प्रेशर चेक अप कैम्प का आयोजन

मैसूर। तेरापंथ युवक परिषद मैसूर के निर्देशन में शहर के प्रसिद्ध मारुति टेम्पल के सामने आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर द्वारा निःशुल्क मधुमेह व ब्लड प्रेशर चेक अप कैम्प का आयोजन किया गया। शिविर में लगभग 60 से अधिक लोगों ने अपनी जाँच कराई।

अणुव्रत चेतना दिवस पर अणुव्रत गीत महासंगान का आयोजन

रतनगढ़। शहर के नवोदयन एकेडमी किड्स स्कूल में आचार्य श्री तुलसी द्वारा प्रतिपादित अणुव्रत आंदोलन के 76 वर्ष पूर्ण होने के पर अमृत महोत्सव के गौरवशाली अवसर पर अणुव्रत विश्व भारती समिति की प्रस्तुति 'अणुव्रत गीत महासंगान' का कार्यक्रम मुख्य अतिथि अशोक रांकावत व रिटायर्ड फौजी नेमीचंद बाना की उपस्थिति में आयोजित किया गया। इस अवसर पर अणुव्रत के नियमों के महत्व के बारे में बच्चों को सविस्तार बताया गया। विद्यालय की छात्रा यशवी चौधरी ने अणुव्रत पर प्रकाश डालते हुए भाषण प्रस्तुत किया। नवोदयन एकेडमी निदेशक रामचंद्र पारीक ने आचार्य श्री तुलसी का संक्षिप्त जीवन परिचय सभी को बताया व उनके जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। इस अवसर पर अध्यापिका रेणु पारीक, कोमल मीणा व रामचंद्र पारीक सहित अभिभावक एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

- आदर्श चुनने के साथ संकल्प बल का होना भी अपेक्षित है। संकल्प बल के साथ उत्साह व साहस भी बना रहना चाहिए।
- जो व्यक्ति भाग्य भरोसे बैठ जाता है, पुरुषार्थ नहीं करता, मेरी दृष्टि में वह दुनिया का अभागा व्यक्ति है। – आचार्य श्री महाश्रमण

मंगलभावना समारोह का आयोजन

शान्तिनिकेतन, गंगाशहर।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी चरितार्थप्रभाजी एवं साध्वी प्रांजलप्रभाजी के सान्निध्य में मंगल भावना समारोह शांतिनिकेतन सेवा केंद्र में आयोजित किया गया। मंगल भावना समारोह को संबोधित करते हुए साध्वी चरितार्थप्रभाजी ने कहा कि जीवन में लक्ष्य निर्धारण आवश्यक है। सेवा प्राप्त होने पर हमने यह लक्ष्य बनाया कि हमें अपने दायित्व को पूर्ण जागरूकता से निभाना है।

इस सेवा कार्य के दौरान मातृवत वात्सल्य सदैव बना रहा। उन्होंने कहा कि इससे पूर्व हमने सुना था कि जिसने गंगाशहर सेवा केंद्र में सेवा कर ली, उसने सभी स्थानों पर सेवा का सौभाग्य प्राप्त कर लिया। यहाँ का श्रावक समाज भी अत्यंत सुदृढ़ और धर्मशील है। उन्होंने सभी के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामनाएँ व्यक्त कीं।

इस अवसर पर साध्वी प्रांजलप्रभाजी ने कहा कि निश्चय नय और व्यवहार नय की दृष्टि से न स्वागत की अपेक्षा है, न ही मंगलकामना की। यह सेवा गुरुदेव के आशीर्वाद और निर्देश से ही सफल हो पाई है। यहाँ हमें बहुत कुछ सीखने को मिला। वरिष्ठ साध्वियों का अपनापन, परस्पर सहयोग, समन्वय और आपसी सहनशीलता के कारण यह सेवा सफल रही। संघ की प्रवृत्तियों को आगे बढ़ाने में तेरापंथी सभा, युवक परिषद और महिला मंडल का अथक परिश्रम रहा।

'शासनश्री' साध्वी ज्ञानवतीजी, साध्वी विवेकश्रीजी और साध्वी कंचनबालाजी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। सेवाग्राही और सेवादायी साध्वियों ने गीतिका के माध्यम से अपने भाव प्रकट किए। कार्यक्रम की शुरुआत महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण से हुई। तेरापंथ कन्या मंडल और तेरापंथी सभा की ओर से भी गीतिका के माध्यम से भाव प्रस्तुत किए गए।

इस अवसर पर तेरापंथी सभा के निवर्तमान अध्यक्ष एवं तेरापंथ न्यास के ट्रस्टी अमरचंद सोनी, सभा के मंत्री जतन संचेती, आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के पूर्व अध्यक्ष हंसराज डागा, तेरापंथ युवक परिषद के उपाध्यक्ष ललित राखेचा, अणुव्रत समिति से करणीदान रांका, युवक रत्न राजेंद्र सेठिया और रोहित बैद ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का सफल संचालन तेरापंथी सभा के कोषाध्यक्ष रतन छलाणी ने किया।

संतों का हुआ मंगल प्रवेश

गांधीनगर।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि मोहजीत कुमारजी ठाणा 3 का मंगल प्रवेश गांधीनगर स्थित तेरापंथ सभा भवन में हुआ।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनिश्री ने कहा कि जो व्यक्ति संयम में रहता है, वह परम लक्ष्य को प्राप्त करता है। परम विजय को पाने के लिए संयम की चेतना का जागरण आवश्यक है। कोई भी कार्य धैर्यपूर्वक करना चाहिए। व्यक्ति जो क्रिया करता है, उसके परिणाम का भी ध्यान रखना चाहिए। प्रवचन सुनने से विचारधारा बदलती है और विचार बदलने से आत्मा का उत्थान होता है। मुनि भव्य कुमार जी ने अपने वक्तव्य में सामायिक साधना के विषय में विशेष जानकारी दी और बताया कि एक ही बात के अनेक शब्दार्थ होते हैं, जिन्हें समझने वाला अपनी बुद्धि और विवेक के अनुसार ग्रहण करता है। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष पारसमल भंसाली ने स्वागत वक्तव्य दिया।

सभा मंत्री विनोद छाजेड़ ने आगामी कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए मुनिश्री से सभा भवन में अधिकाधिक विराजने का निवेदन किया। सभा के पूर्व अध्यक्ष बहादुर सेठिया ने गीतिका का संगान किया।

ट्रस्ट अध्यक्ष सुशील चोरड़िया ने अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर सभा परिवार द्वारा आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ चेतना केंद्र और सेवा केंद्र के नव-मनोनीत अध्यक्ष एवं संपूर्ण टीम को बधाई दी गई तथा अध्यक्ष मदन बोराणा का सम्मान किया गया।

इस अवसर पर सभा के पूर्व अध्यक्ष, पदाधिकारी, तेयुप अध्यक्ष विमल धारीवाल, महिला मंडल अध्यक्षा रिजु डूंगरवाल एवं स्थानीय विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री विनोद छाजेड़ ने किया।

कार्यशाला में जाने फास्ट फूड के नुकसान

नोखा।

तेरापंथ भवन में 'शासनगौरव' साध्वी राजमतीजी के सान्निध्य में फास्ट फूड कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला के मुख्य अतिथि डॉ. मधुकर जैन थे। कार्यक्रम की शुरुआत महिला मंडल के द्वारा मंगलाचरण से हुई। अध्यक्षा सुमन मरोठी ने अतिथियों का स्वागत अपने भावों से किया। मुस्कान रांका, शासन सेवी डॉ. प्रेमसुख मरोठी, साध्वी मनोज्ञप्रभा जी, साध्वी प्रभातप्रभा जी आदि ने फास्ट फूड, जंक फूड के बारे में बताया। मुख्य वक्ता डॉ. मधुकर जैन ने बताया कि फास्ट फूड खाने से हमारे जीवन में तरह-तरह की बीमारियां पनपती हैं जो आगे जाकर हमारे जीवन के लिए घातक साबित होती हैं, इसलिए हम सभी को इन फास्ट फूड, जंक फूड आदि से बचना चाहिए। साथ में यह भी बताया कि हमें अपने स्वास्थ्य के लिए हमेशा घर के भोजन को अधिक महत्व देना चाहिए।

कार्यक्रम में तेरापंथ सभा से मंत्री मनोज घीया, तेयुप अध्यक्ष निर्मल चोपड़ा, मंत्री सुरेश बोथरा, के साथ सभा, तेरापंथ महिला मंडल, युवक परिषद्, किशोर मंडल, कन्या मंडल, ज्ञानशाला आदि के सदस्यों की उपस्थिति रही।

तेरापंथ सभा के मंत्री मनोज घीया ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन भावना मरोठी ने किया।

उपसर्गहर स्तोत्र अनुष्ठान का हुआ आयोजन

पार्श्वनाथ सिटी, जोधपुर।

'शासनश्री' साध्वी सत्यवती जी आदि ठाणा-4 के सान्निध्य में उपसर्गहर स्तोत्र के अनुष्ठान का आयोजन किया गया। साध्वी शशिप्रज्ञा जी ने कहा कि आचार्य भद्रबाहु द्वारा रचित यह स्तोत्र जन-जन के जीवन में मंगल करने का काम करता है। जब-जब संघ पर संकट आये तब-तब आचार्यों के द्वारा अनेकानेक स्तोत्रों की रचना की गई। ये स्तोत्र अपने आप में बहुत शक्तिशाली एवम् प्रभावशाली हैं, जिससे मानव अपने आप अध्यात्म कवच द्वारा अपना उत्थान कर सकता है। पार्श्वनाथ सिटी का संपूर्ण श्रावक-श्राविका समाज निष्ठा, लगन, आस्था के साथ, एकाग्र चित्त होकर आध्यात्मिक आनन्द की अनुभूति कर रहा था एवम् अपने आप को भावित कर रहा था।

संक्षिप्त खबर

योग तथा ध्यान का आयोजन

साउथ कोलकाता। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में फिट युवा हिट युवा के अंतर्गत प्रोजेक्ट फोकस के दूसरे चरण में योग तथा ध्यान का आयोजन प्रेक्षा फाउंडेशन के सहयोग से लायंस सफारी पार्क में हुआ। तेयुप साउथ कोलकाता के अध्यक्ष मोहित बैद ने अपने स्वागत वक्तव्य के साथ योग से होने वाले फायदे की जानकारी प्रदान की।

कार्यक्रम में साउथ सभा, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम कोलकाता साउथ, अणुव्रत समिति, कोलकाता, तेरापंथ महिला मंडल साउथ कोलकाता, प्रेक्षा फाउंडेशन कोलकाता, तेयुप साउथ कोलकाता तथा किशोर मंडल के सदस्यों की अच्छी उपस्थिति रही। कॉर्डिनेटर रोहित बैद एवं कन्वेनर रोहित दूगड़ ने पूरी मेहनत कर कार्यक्रम को सफल प्रारूप दिया। कार्यक्रम में लगभग 65 लोगों की उपस्थिति रही।

बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन

धुबड़ी। अभातेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद् धुबड़ी द्वारा मुनि डॉ. ज्ञानेंद्र कुमार जी के सान्निध्य में द्विदिवसीय बारह व्रत कार्यशाला का स्थानीय तेरापंथ भवन में आयोजन किया गया। विजय गीत एवं श्रावक निष्ठा पत्र के वाचन के पश्चात तेयुप धुबड़ी के अध्यक्ष बजरंग कुंडलिया ने अपने स्वागत व्यक्तत्व में संपूर्ण समाज का स्वागत व अभिनंदन किया। कार्यशाला में मुनि डॉ ज्ञानेंद्र कुमार जी ने विस्तृत रूप से बारह व्रतों को समझाया। मुनिश्री ने हर व्रत में किन बातों पर ध्यान दिया जाए व कैसे उसके पालन किया जाए पर भी जोर डाला। इस कार्यशाला में कुल 76 संभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में तेयुप धुबड़ी के सदस्यगण, विभिन्न सभा–संस्थाओं के पदाधिकारीगण, समाज के गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

सामाजिक सेवा कार्य

साउथ कोलकाता। तेयुप साउथ कोलकाता द्वारा क्षेत्र में रास बिहारी क्रॉसिंग में टॉलीगंज ट्रैफिक पुलिस के सहयोग से बिना हेलमेट के दोपहिया वाहन चला रहे लोगों को हेलमेट दिया तथा उनको हेलमेट लगाने से होने वाले फायदों के बारे में अवगत करवाया। इस सेवा कार्य में तेयुप साउथ कोलकाता के उपाध्यक्ष आनंद मनोत, जिनेंद्र सुराना एवं कार्यसमिति सदस्य हर्ष दुगड़ उपस्थित थे।

बीकानेर। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा गंगाशहर द्वारा नागणेची मंदिर के पास स्थित विमंदित पुनर्वास गृह के सेवा आश्रम में भोजन वितरण का कार्य किया। इस अवसर पर तेरापंथी सभा के निर्वतमान अध्यक्ष अमरचंद सोनी, पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्य उपस्थित रहे।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

जैन संस्कार विधि

नूतन गृह प्रवेश

■ **गाँधीनगर दिल्ली।** श्रीडूंगरगढ़ निवासी कृष्णानगर, दिल्ली प्रवासी जतन-हेमा श्यामसुखा का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक प्रकाश सुराणा व अशोक सिंघी ने विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपादित करवाया।

■ **भीलवाड़ा।** सुरेंद्र मेहता के नूतन गृह प्रवेश का कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से संस्कारक अशोक सिंघवी व निर्मल सुतरिया द्वारा विशिष्ट मंत्रोच्चार के साथ संपन्न करवाया गया।

■ **गुरुग्राम।** तेरापंथ युवक परिषद् गुरुग्राम के अंतर्गत विवेक पदम कुमार सेठिया के नवनिर्मित आवास का गृह प्रवेश संस्कार संस्कारक अंकुर लुणिया ने विधि पूर्वक संपन्न करवाया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

■ **सूरत।** ज्ञानशाला गुजरात अंचल टेक्नो ऑफिस का शुभारंभ राष्ट्रीय संयोजक मनीष मालू एवं सहयोगी संस्कारक एवं टेक्नो टीम संयोजक विशाल पारीख ने मंत्रोच्चार के साथ जैन संस्कार विधि से कार्यक्रम करवाया। इसी के साथ गुजरात अंचल के नए 'प्रोजेक्ट मैजिक ऑफ नवकार' का भी शुभारंभ किया गया।

■ **साउथ हावड़ा।** रतनगढ़ निवासी साउथ हावड़ा प्रवासी बिमल कुमार सिपानी के सुपुत्र ऋषभ सिपानी के नूतन प्रतिष्ठान सिपानी एंटरप्राइज का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से तेरापंथ युवक परिषद् साउथ हावड़ा द्वारा संपादित हुआ। संस्कारक ऋषभ दुधोड़िया एवं सुनीत नाहटा ने मंत्रोच्चार के द्वारा कार्यक्रम संपादित करवाया।

मंत्र प्रेक्षा कार्यशाला का आयोजन

गुवाहाटी।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ महिला मंडल गुवाहाटी तथा प्रेक्षा वाहिनी के संयुक्त तत्वाधान में केंद्र द्वारा निर्देशित मंत्र प्रेक्षा कार्यशाला का आयोजन स्थानीय तेरापंथ धर्मस्थल में किया गया। नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत हुई।

बहनों द्वारा प्रेक्षा गीत का संगान किया गया। अध्यक्ष अमराव देवी बोथरा ने अपने वक्तव्य से सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम संयोजिका कांता बच्छावत ने मंत्र प्रेक्षा के महत्व को समझाते हुए बताया कि मंत्र का जाप यदि श्रद्धा और विश्वास के साथ किया जाए तो वह हमारे जीवन में काफी कारगर सिद्ध हो सकता है।

मुख्य प्रशिक्षिका के रूप में खुश्कीबाग से पधारी कविता दूगड़ ने नवकार मंत्र की प्रेक्षा करवाई और बहुत ही सुंदर तरीके से इसके महत्व को समझाया। कार्यक्रम के दूसरे चरण में मंत्री ममता दूगड़ ने प्रेरणा गीत की काव्यात्मक रूप से प्रस्तुति की। प्रतियोगिता के विजेता व प्रतिभागी बहनों का नाम घोषित किया। प्रतियोगिता में 11 बहनों ने भाग लिया। सभी को पारितोषिक देकर सम्मानित किया गया। इस प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति डॉ सारिका दूगड़ की रही। प्रतियोगिता के निर्णायक की भूमिका कवयित्री प्रज्ञा शर्मा ने निभाई। कार्यक्रम में बहनों की सराहनीय उपस्थिति रही।

आध्यात्मिक मिलन समारोह आयोजित

कुम्भकोणम।

आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि हिमांशु कुमार जी एवं मुनि रश्मि कुमार जी का आध्यात्मिक मिलन रामन एंड रामन पैट्रोल पंप, पिंडारी कुलम के पास, कुम्भकोणम तमिलनाडु में हुआ। आस-पास के 11 क्षेत्रों से पधारे श्रावक-श्राविकाएं इन अद्वितीय क्षणों के साक्षी बने। जुलूस के साथ MP रेसीडेंसी में मुनिवृंद का भव्य प्रवेश हुआ। कुम्भकोणम सभा से राजेश सेठिया ने मुनिवृंद का एवं बाहर से पधारे अतिथियों का स्वागत अभिनन्द किया। मदुरै तेरापंथ ट्रस्ट अध्यक्ष ओमप्रकाश कोठारी, गुड़ियातम, कुम्भकोणम और मदुरै की तेरापंथ महिला मंडल, तिरुपुर सभा अध्यक्ष अनिल आंचलिया आदि ने अपने भाव गीतिका एवं वक्तव्य के द्वारा रखे। मदुरै वासियों ने मुनि हिमांशु कुमार जी के चातुर्मास हेतु एवं गुडियातम वासियों ने मुनि रश्मि कुमार जी के चातुर्मास हेतु खड़े होकर गुरुदेव के प्रति हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित की ओर मुनिश्री को जल्द से जल्द पधारने का निवेदन किया।

मुनि रश्मि कुमार जी ने मुनि हिमांशु कुमार जी एवं मुनि हेमंत कुमार जी के बारे में कई विशेषताएं बताते हुए कहा कि हिमांशु कुमार जी जैसे संतो का संघ में होना अपने आप में विलक्षण बात है। आप एक ही 11 के बराबर है।

वहीं मुनि हिमांशु कुमार जी ने भी कुम्भकोणम समाज को सक्रिय बताते हुए मुनि रश्मि कुमार के बारे में भी उनकी सरलता, विशेषता आदि बताते हुए मुनि प्रियांशु कुमार जी को भी विकास पथ पर बढ़ते रहने की प्रेरणा दी। मुनिश्री ने बताया कि संत मिलन आध्यात्मिक आत्माओं का मिलन होता है, जो संघ की प्रभावना में सहायक होता है। मुनि हेमंत कुमार जी ने भी अपने भाव रखे।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि प्रियांशु कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
10 मार्च - 16 मार्च, 2025

संबोधि

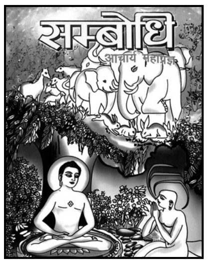

गृहिधर्मचर्या

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

इसलिए आगम तथा ऋषि साहित्य में सत्संकल्पों की एक लंबी धारा प्रवाहित हो रही है, उन संकल्पों का चयन कर चित्त को भावित करते हुए नकारात्मक सोच से अपने को मुक्त कर जीवन को स्वर्णिम बनायें। '**दैवीसंपविमोक्षाय**' मुक्ति के लिए दैवी गुणों का अवलंबन लेना। यह प्रशस्त भावना का ही रूप है। सद्‌गति का यह सीधा सरल पथ है। इससे उल्टे अप्रशस्तभाव आसुरी संपद् बंधन के लिए है, दुर्गति के लिए है।

४३. वाचः कायस्य कौकुच्यं, कन्दर्प विकथा तथा।
कृत्वा विस्मापयत्यन्यान्, कान्दर्पी तस्य भावना॥

वाणी और शरीर की चपलता, कामचेष्टा और विकथा के द्वारा जो दूसरों को विस्मित करता है, उसकी भावना 'कान्दर्पी' भावना कहलाती है।

४४. मन्त्रयोगं भूतिकर्म, प्रयुक्ते सुखहेतवे।
अभियोगी भवेत्तस्य, भावना विषयैषिणः।।

विषय की गवेषणा करने वाला जो व्यक्ति सुख की प्राप्ति के लिए मंत्र और जादू-टोने का प्रयोग करता है, उसकी भावना 'अभियोगी' भावना कहलाती है।

४५.' ज्ञानस्य ज्ञानिनो नित्यं, संघस्य धर्मसेविनाम्।
वदन्नऽवर्णानाप्नोति, किल्विषिकीञ्च भावनाम्।।

ज्ञान, ज्ञानवान्, संघ और धार्मिकों का जो अवर्णवाद बोलता है, उसकी भावना 'किल्विषिकी' भावना कहलाती है।

४६. अव्यवच्छिन्नरोषस्य, क्षमणान्त्र प्रसीदतः।
प्रमादे नानुतपतः, आसुरी भावना भवेत्॥

जिसके रोष निरंतर बना रहता है, जो क्षमायाचना करने पर भी प्रसन्न नहीं होता और जो अपनी भूल पर अनुताप नहीं करता, उसकी भावना 'आसुरी' भावना कहलाती है। (क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्य भारमल जी युग

साध्वीश्री नगांजी (बोरावड़) दीक्षा क्रमांक 76

साध्वीश्री बड़ी तपस्विनी थी। आपने सतरह चातुर्मास में एकान्तर तप किया। उपवास, बेले बहुत किये। तेले से लेकर ग्यारह तक लड़ी, दो बार तेरह और एक बार पानी के आगार से 20 दिन का तप किया।

शीत ऋतु में 17 वर्षों तक दो पछेवडी और 13 वर्षा तक एक पछेवड़ी रखी। इस प्रकार शीतसहन किया। अन्त में दो प्रहर के अनशन से समाधिमरण को प्राप्त हुई।

– साभारः शासन समुद्र –

श्रमण महावीर

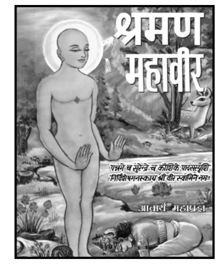

तीर्थ और तीर्थंकर

एक-एक विद्वान् आते गये और भगवान् से संबोधन और अपनी धारणा में संशोधन पाकर दीक्षित होते गये। उनकी धारणाएं थीं-

व्यक्त– पंचभूत का अस्तित्व नहीं है।

सुधर्मा– प्राणी मृत्यु के बाद अपनी ही योनि में उत्पन्न होता है।

मंडित– बंध और मोक्ष नहीं है।

मौर्यपुत्र– स्वर्ग नहीं है।

अकंपित– नरक नहीं है।

अचलभ्राता– पुण्य और पाप पृथक् नहीं हैं।

मेतार्य– पुनर्जन्म नहीं है।

प्रभास– मोक्ष नहीं है।

भगवान् ने परिषद् के सम्मुख धर्म की व्याख्या की। उसके दो अंग थे अहिंसा और समता। भगवान् ने कहा, 'विषमता से हिंसा और हिंसा से व्यक्ति के चरित्र का पतन होता है। व्यक्ति-व्यक्ति के चरित्र पतन से सामाजिक चरित्र का पतन होता है। इस पतन को रोकने के लिए अहिंसा और उसकी प्रतिष्ठा के लिए समता आवश्यक है।

हिंसा, घृणा, पशुबलि और उच्च-नीचता के दमनपूर्ण वातावरण में भगवान् का प्रवचन अमा की सघन अंधियारी में सूर्य की पहली किरण जैसा लगा। जनता ने अनुभव किया कि आज इस प्रकाश की अपेक्षा है। महावीर जैसे समर्थ धर्मनेता के द्वारा वह पूर्ण होगी। उसकी संपन्नता में अपनी आहुति देने के लिए अनेक स्त्री-पुरुष भगवान् के चरणों में समर्पित हो गए।

चन्दनबाला साध्वी बनने के लिए भगवान् के सामने उपस्थित हुई।

वैदिक धर्म के संन्यासी स्त्री को दीक्षित करने के विरोधी थे। श्रमण-परम्परा में स्त्रियां दीक्षित होती थीं, भगवान् पार्श्व की साध्वियां उस समय विद्यमान थीं किन्तु उनका नेतृत्व शिथिल हो गया था। उनमें से अनेक साध्यियां दीक्षा को त्याग परिव्राजिकाएं बन चुकी थीं।

भगवान् महावीर स्त्री के प्रति वर्तमान दृष्टिकोण में परिवर्तन लाना चाहते थे। वैदिक प्रवक्ता उसके प्रति हीनता का प्रसार करते थे। भगवान् को वह इष्ट नहीं था। उन्होंने साध्वी संघ की स्थापना कर स्त्री जाति के पुनरुत्थान के कार्य को फिर गतिशील बना दिया।

भगवान् ने चंदना को दीक्षित कर उसे साध्वी संघ का नेतृत्व सौंप दिया। साधु-संघ का नेतृत्व इन्द्रभूति आदि ग्यारह विद्वानों को सौंपा !

भगवान् महावीर गणतंत्र के वातावरण में पले-पुसे थे। सत्ता और अर्थ के विकेन्द्रीकरण का सिद्धान्त उनके रक्त में समाया हुआ था। वर्तमान में वे अहिंसा के वातावरण में जी रहे थे। उसमें केन्द्रीकरण के लिए कोई अवकाश नहीं है।

भगवान् ने साधु-संघ को नौ गणों में विभक्त कर उसकी व्यवस्था का विकेन्द्रीकरण कर दिया। इन्द्रभूति आदि की गणधर के रूप में नियुक्ति की। प्रथम सात गणों का नेतृत्व एक-एक गणधर को सौंपा। आठवें का नेतृत्व अंकपित और अचलभ्राता तथा नौवें गण का नेतृत्व मेतार्य और प्रभास को सौंपकर संयुक्त नेतृत्व की व्यवस्था की।

जो लोग साधु-जीवन की दीक्षा लेने में समर्थ नहीं थे, किन्तु समता धर्म में दीक्षित होना चाहते थे, उन्हें भगवान् ने अणुव्रत की दीक्षा दी। वे श्रावक-श्राविका कहलाए। (क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

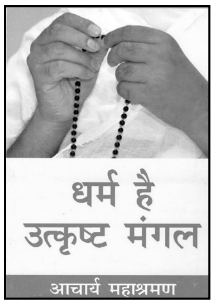

-आचार्यश्री महाश्रमण

विशिष्ट धर्माराधना का पर्व : पर्युषण

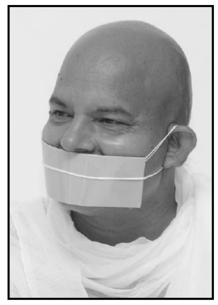

१. **जिनेन्द्रपूजा**– वीतराग तीर्थंकरों के प्रति भक्ति ।

२. **गुरु-उपासना**– धर्मगुरुओं की उपासना-सेवा।

३. **सत्त्वानुकम्पा**– प्राणियों के प्रति दया-भाव।

४. **शुभपात्रदान**– सुपात्र दान।

५. **गुणानुराग**– गुणों के प्रति अनुराग, आकर्षण।

६. **आगमश्रुति**– आगमों, धर्मशास्त्रों का श्रवण ।

इन छः बातों का आचरण जीवन में होना चाहिए।

व्यक्ति सुखेच्छु होता है। सुख प्राप्ति के लिए वह कृतसमर्पित बना रहता है। वह सुख प्राप्ति के लिए संकल्प और प्रयास करता है और प्रत्युत् कई बार पुनः दुःख के आवर्त्त में फंस जाता है। स्थायी और निरपेक्ष सुख की प्राप्ति का एकमात्र मार्ग है अध्यात्म। उसकी आराधना सदैव की जानी चाहिए। परन्तु उसकी सघन साधना सबके लिए सदा सम्भव नहीं बनती। इसलिए कुछ दिनों को धर्माराधना के लिए विशेष रूप से निर्धारित किया गया है। जैसे अन्य परम्पराओं में रोजा व नवरात्र का समय विशेष आराधना का होता है। वैसे ही जैन श्वेताम्बर परम्परा में पर्युषण और दिगम्बर परम्परा में दशलक्षण पर्व विशेष धर्माराधना का समय है। प्रकृष्ट साधना सार्वजनिक रूपेण हो, इस दृष्टि से कुछ समय निर्धारित किए गए हैं, उन समयों का अपना वैशिष्ट्य और महत्त्व भी हो सकता है। श्रावण, भाद्रव महीनों में तपः आराधना अधिक की जाती है। अष्टमी, चतुर्दशी आदि तिथियों में भी विशेष आराधना का निर्देश आगमों में उपलब्ध है। श्वेताम्बर जैन परम्परा में पर्युषण को पूरे वर्ष में विशेष धर्माराधना के अवसर के रूप में गौरव प्राप्त है। उसमें भी सर्वाधिक महत्त्व और मूर्धन्य स्थान संवत्सरी महापर्व के दिन को प्राप्त है। इस दिन साधु-साध्वियां अनिवार्यतया पूर्ण उपवास करते हैं। श्रावक-श्राविकाएं भी उपवास और यथासम्भव पौषध की आराधना करते हैं। बच्चों को भी यथासम्भव उपवास, सामायिक व प्रवचन-श्रवण के लिए प्रेरित किया जाता है। संवत्सरी के दिन तो प्रलम्ब प्रवचन का कार्यक्रम चलता ही है। संवत्सरी की तैयारी स्वरूप पूर्ववर्ती सात दिनों में भी विशेष रूप से प्रवचन व धर्माराधना का कार्यक्रम चलता है। जहां आचार्यों, साधु-साध्वियों की उपस्थिति होती है, वहां तो उन पूज्यवरों से पर्युषण पर्व को आराधना में श्रावक-समाज को सहयोग मिलता ही है, उनको अनुपस्थिति में भी स्वाध्यायियों, उपासकों आदि के माध्यम से उसकी यत्किंचित् पूर्ति करने का प्रयास किया जाता है।

संवत्सरी मैत्री पर्व के रूप में प्रख्यात है। इस दिन वैमनस्य को सौमनस्य में हृदय से रूपांतरित किया जाए तो इस पर्व को मनाने की अधिक सार्थकता होती है। यदि वैर-वैमनस्य हो ही नहीं तो बहुत अच्छी स्थिति है, भविष्य में सदा सौमनस्य को पुष्ट बनाए रखने का संकल्प इस दिन किया जाए। पर्युषण-संवत्सरी की आराधना से उस आध्यात्मिक ऊर्जा को प्राप्त किया जाए जिसके आधार पर वर्ष भर की सारी गतिविधियां अध्यात्म प्रभावित रह सकें, मन में क्षमाशीलता का भाव कुछ विकसित रूप में रह सके।

आध्यात्मिक पोषण का अवसर पर्युषण

दशलक्षण एवं पर्युषण पर्व धर्म की प्रकृष्ट आराधना अथवा सघन आध्यात्मिक पोषण-प्राप्ति का महान् अवसर होता है। क्षमा आदि दस धर्मों को जानने और उन्हें आचीर्ण करने की प्रेरणा पाने का सुन्दर अवसर दशलक्षण पर्व को कहा जा सकता है। उसी का सहोदर भाई है पर्युषण पर्व, जिसमें विभिन्न तरीकों से धर्माराधना की जाती है। यह समय प्रमुख रूप से धर्माराधना के लिए ही निर्धारित रहना चाहिए। (क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com पर ई-मेल अथवा 8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

मार्च 2025
सप्ताह के विशेष दिन

तिथि	विशेष दिन
18 मार्च	भगवान पार्श्वनाथ च्यवन एवं केवलज्ञान कल्याणक
19 मार्च	भगवान चन्द्रप्रभु च्यवन कल्याणक
22 मार्च	भगवान ऋषभ जन्म कल्याणक, वर्षीतप प्रारंभ
23 मार्च	भगवान ऋषभ दीक्षा कल्याणक

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री माणकलालजी युग

मुनिश्री दुलीचंदजी (पचपदरा) दीक्षा क्रमांक 309

मुनिश्री बड़े तपस्वी थे। आपने 31 का तप दो बार और 36 का तप एक बार किया और भी बहुत तपस्या की। अपने अंतिम चतुर्मास में आपने जो तप किया वह इस प्रकार है– पंचोले/2, 6/1, 7/1, 8/1, 9/1, 10/1, 11/1, 12/1, 13/1, 14/1 इस तपस्या के कुल दिन 100 और पारवे के दिन केवल 11 थे।

– साभार: शासन समुद्र –

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
10 मार्च - 16 मार्च, 2025

तनाव मुक्ति का अमोघ साधन है योग

इन्डियन योग एसोशियेशन राज्य समितियों का राष्ट्रीय सम्मेलन

नई दिल्ली।

इन्डियन योग एसोसिएशन का राष्ट्रीय अधिवेशन श्री श्री रविशंकर जी की अध्यक्षता में अणुव्रत भवन के सभागार में आयोजित हुआ। इस अवसर पर अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या डॉ. साध्वी कुन्दनरेखाजी, योग एसोसिएशन की अध्यक्ष डॉ. हंसा योगेन्द्र, डॉ. एच. आर. नागेन्द्र, डॉ. ईश्वर वासवारेड्डी सहित कई गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति थी। अणुव्रत भवन आगमन पर अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के प्रबन्ध न्यासी व योग एसोशियेशन के कोषाध्यक्ष के. सी. जैन ने सभी संत जनों व एसोसिएशन के पदाधिकारियों का स्वागत किया।

इस अवसर पर साध्वी कुन्दनरेखा जी ने कहा कि अणुव्रत आंदोलन आचार्य श्री तुलसी की अनुपम देन है। प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान वर्तमान तनाव भरे वातावरण के लिए संजीवनी है जिसके प्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी रहे। वर्तमान में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण भी पूरे देश में पदयात्रा कर जन-जन को नैतिकता, नशामक्ति व सद्भावना का संदेश दे रहे हैं। अध्यात्म विभूति आचार्य श्री महाश्रमण जी प्रेक्षाध्यान पद्धति की डोर थामे जन-जन की अंतर चेतना को जगाने हेतु प्रयासरत हैं।

साध्वी श्री ने श्री श्री रविशंकर से कहा कि यदि महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी का इन्डियन योग एसोशियेशन की गवर्निंग बॉडी में स्थान हो तो यह केन्द्र और विश्व स्तर पर कार्य कर सकता है एवं गुरूदेव के कारण इसमें अनेकता में एकता का सूत्र स्थापित हो सकता है। श्री श्री ने कहा यदि ऐसा हो जाए तो हमारा बहुत बड़ा सौभाग्य होगा। आचार्य महाश्रमण एक विरल संत हैं। मां हंसा ने भी इस बात की अनुमोदना की।

कार्यक्रम में सर्व प्रथम योग एसोशियेशन की एक्जक्यूटिव काउंसिल की अध्यक्ष मां डॉ. हंसा योगेन्द्र जी ने सबका अभिवादन करते हुए कहा कि आज का यह कार्यक्रम बहुत ही ऐतिहासिक है। योग की सभी संस्थाओं का केन्द्रीय संगठन इंडियन योग एशोसियेशन आज व्यापक रूप से योग पर कार्य कर रहा है। इसका यह अधिवेशन जैन धर्म के अणुव्रत भवन में होना भी अपने आप में विशिष्ट है। पूज्य श्री श्री सहित सभी वरिष्ठ संत वृन्द की उपस्थिति में यह कार्यक्रम हो रहा है यह अपने आप में विरल है।

साध्वी डॉ. कुन्दनरेखा जी ने कहा कि आज का मंच वास्तव में सबको जोड़ने वाला है। अलग-अलग क्षेत्रों से पधारे इतने विद्वान संतों का इस अणुव्रत भवन में आगमन अद्भुत है। उन्होंने कहा कि वर्तमान तनाव भरे वातावरण में योग व ध्यान वह माध्यम से जिससे व्यक्ति शारीरिक, मानसिक व भावनात्मक तनावों से मुक्त रह सकता है।

इस अवसर पर आर्ट ऑफ़ लिविंग के संस्थापक व इण्डियन योग एसोशियेशन के पूर्व अध्यक्ष श्री श्री रविशंकर जी ने कहा कि आचार्य तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ ने आधुनिक शिक्षा प्रणाली संतुलित करने के लिए विज्ञान एवं अध्यात्म का समन्वित रूप प्रेक्षाध्यान प्रस्तुत किया। सन 1982 में जब आचार्य श्री तुलसी, युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ जी अणुव्रत भवन में थे, हम तब 24 वर्ष के थे, उस समय हमने एक सप्ताह यहां रहकर ध्यान का अभ्यास किया, अणुव्रत भवन से हमारी गहरी स्मृतियां है। आज इस भवन को और भव्य बना दिया गया है। यह अत्यन्त पवित्र स्थल है। यहां यह कार्यकम होना ही अपने आप में योग के महत्व को बढ़ाता है।

इस अवसर पर डॉ. एच. आर. नागेन्द्र ने कहा कि आज और व्यापक स्तर पर योग के कार्य को करना है। योग ही वसुधैव कुटुम्बकम् की परिकल्पना को साकार कर सकता है। उन्होंने इण्डियन योग एसोशियेशन की स्थापना, इसके इतिहास व इसके विकास और भविष्य की संभावनाओं पर प्रकाश डाला। प्रबन्ध न्यासी के. सी. जैन ने अणुव्रत भवन में सभी का स्वागत करते हुए कहा कि आज अणुव्रत भवन में सभी संतों का आगमन हम सबके लिए सौभाग्य की बात है। उन्होंने जैन धर्म में योग व ध्यान के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी ने प्रेक्षाध्यान का आविष्कार कर मानवता के लिए बहुत बडा वरदान दिया।

कार्यक्रम का संचालन एक्जूक्यूटिव कांउसिल के जनरल सेकेट्री सुबोध तिवारी ने कुशलता पूर्वक किया।

इस अवसर पर 22 राज्यों से पधारे एक्जक्यूटिव सदस्य, श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया, अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के न्यासी शांति कुमार जैन, सुशील राखेचा, प्रमोद घोडावत, पी. सी. कपूर, डा. एस.पी. मिश्रा, डा. डी. आर. कार्तिकेयन, डा. राघवेन्द्र राव, प्रो. सरोज शर्मा सहित कई महानुभावों की सहभागिता रही। कार्यक्रम को सफल बनाने में इण्डियन योग संस्थान व अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के कार्यकर्ताओं की प्रमुख भूमिका रही।

प्रवर्धन कार्यशाला का हुआ भव्य आयोजन

हैदराबाद।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल हैदराबाद द्वारा राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा की अध्यक्षता में प्रवर्धन कार्यशाला का भव्य आयोजन तेरापंथ भवन, डी. वी. कॉलोनी, सिकंदराबाद में किया गया। कार्यशाला से पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा राधास्वामी कॉलोनी में कन्या विकास योजना के अन्तर्गत बैंचों का उद्घाटन किया गया। राष्ट्रीय टीम ने आचार्य श्री महाश्रमण फिजियोथेरेपी सेन्टर का अवलोकन किया। इसके पश्चात समृद्ध राष्ट्र योजना के तहत तेरापंथ भवन में सिंगल यूज प्लास्टिक क्रशिंग मशीन का अनावरण भी राष्ट्रीय अध्यक्ष के करकमलों से किया गया। प्रवर्धन कार्यशाला में स्थानीय अध्यक्ष कविता आच्छा ने अपने स्वागत भाषण में राष्ट्रीय टीम, सभी आगंतुक मेहमानों, अन्य संस्थाओं के पदाधिकारियों का स्वागत किया और तेरापंथ महिला मंडल हैदराबाद की गतिविधियों की जानकारी दी। महिला मंडल हैदराबाद की कार्यसमिति बहनों द्वारा स्वागत गीतिका की प्रस्तुति दी गई।

कार्यशाला के प्रथम सत्र 'प्रबुद्ध महिला सेमिनार' में हैदराबाद की प्रबुद्ध महिलाओं को विशिष्ट अतिथि के रुप में आमंत्रित किया गया। अरोमा सिंह ठाकुर (आई जी - RPF), वी. श्यामला (एसिस्टेंट सब इंस्पेक्टर), राजकुमारी श्रीश्रीमाल, निर्मला भंसाली, सुनीता बगारिया प्रबुद्ध महिला पैनल का हिस्सा बनी। राष्ट्रीय अध्यक्ष और महामंत्री ने टॉक शो के माध्यम से उन सभी महिलाओं की सफलता की यात्रा व जीवन के संघर्ष को जाना। प्रवर्धन कार्यशाला में बताया गया कि एक महिला स्वयं का विकास कर देश की उन्नति में अपना योगदान दे सकती है। द्वितीय सत्र में राष्ट्रीय अध्यक्ष ने शाखा मंडल की सार संभाल की और बहनों की जिज्ञासाओं का समाधान दिया। कन्यामंडल द्वारा एक नाटिका की प्रस्तुति दी गई साथ उन्होंने कन्याओं द्वारा संपादित कार्यों की जानकारी भी दी। वीणा बैद ने स्वस्थ एवं शांतिपूर्ण जीवन हेतु प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करवाया। दूसरे सत्र का आभार सह मंत्री प्रेम संचेती ने किया।

इस कार्यशाला में तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुशील संचेती, तेयुप अध्यक्ष अभिनन्दन नाहटा, टीपीएफ के अध्यक्ष विरेन्द्र घोषल, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रकाश भंडारी, ज्ञानशाला क्षेत्रीय प्रभारी संगीता गोलछा उपस्थिति थे। साध्वीप्रमुखाश्री जी के संदेश का वाचन मंडल की संरक्षिका विमलेश सिंघी द्वारा व आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष नमिता सिंघी द्वारा किया गया। मंत्री सुशीला मोदी व कार्यसमिति सदस्य मनीषा सुराणा ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया।

कार्यशाला में वरिष्ठ बहनों के साथ पदाधिकारी एवं महिला मंडल की सदस्याएं उपस्थित थी। प्रवर्धन कार्यशाला को सफल बनाने में संयोजिका बहनों का सराहनीय सहयोग रहा।

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की चतुर्थ पुण्यतिथि पर चारित्रात्माओं के उद्‌गार

तस्वीर तेरी ही समाई है

● साध्वी मौलिकयशा ●

आंखों में मेरे तस्वीर तेरी ही समाई है।
हर पल हर क्षण खोजे ये मन मुझे तेरीऽऽ याद आई है।।

तुलसी की कृति निराली, सबने ये माना था।
गुरु वचनों पे चलना, प्रण को निभाया था।
तीनों गुरुओं के दिल, को जीत लियाऽऽऽ,
शम, श्रम, सम मय जीवन, गीत रहा।।

अद्वितीय, असाधारण साध्वीप्रमुखा थे।
महानिर्देशिका महाश्रमणी कहाते थे।
शासनमाता बनकर संभाला हमें,
साध्वी समाज तेरा ऋणी रहे ।।

महावीर ने चुनी दिवाली, तुम्हें भायी होली थी।
जन उद्धार करने, खुली तेरी झोली थी।
हर सांस कहे हर पल, मां तू कहांऽऽऽ,
बिन तेरे लगता है सूना जहां ॥

फाल्गुन पूनम आते ही, आँखें भर आई है।
वर्तमान साध्वी प्रमुखा तेरी परछाई है।
भैक्षव शासन नंदन, वन ये मिलाऽऽऽ,
महाश्रमण साये में जीवन खिला ।।

तर्ज : आंखों में तेरी

थी संघ की एक नजीर

● साध्वी गुप्तिप्रभा ●

विनय विवेक विद्या की अधिष्ठात्री श्रमणी गण की जागीर।
अनाग्रह अनावेश अनासक्ति से तोड़ती कर्मों की प्राचीर।
सहस्त्र गुणों की धारक अनगिन अर्हताओं की पुंज।
शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री जी थी संघ की एक नजीर।।

आचार्य त्रय की कृपा बनी धीर, वीर और गंभीर।
सातों साध्वी प्रमुखाओं थी उनमें उजली तस्वीर।
खूबियों को देख खुशमिजाजी, बन जाता था हर दर्शक।
शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री जी थी संघ की एक नजीर।।

भगवई आगम का संपादन करते, नहीं बनी कभी अधीर।
श्रद्धा और समर्पण की चलती प्रति पल सुख शांत समीर।।
साध्वीगण में आधार श्रृंगार और उपहार थी ललाम।
शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री जी थी संघ की एक नजीर।।

आखों में तेजस्विता, वाणी में ओजस्विता हरती सबकी पीर।
सहजता सुघड़ता सरलता से जीवन बना गंगा सा निर्मल नीर।।
अप्रमाद को योगक्षेम का आदर्श बनाया अपने संयम जीवन में।
शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री जी थी संघ की एक नजीर।।

आठवें दशक में गुरु सहयात्रा अद्भुत थी तकदीर।
साधना आराधना और प्रशासना में करती कितना तदवीर॥
प्रेरणा पाथेय या उनसे पुलकित है रोम-रोम श्रमणी गण का।
शासन माता साध्वी प्रमुखाश्री जी थी संघ की एक नजीर।।

प्रोजेक्ट फोकस का शुभारंभ

बेंगलुरु। तेरापंथ युवक परिषद, बेंगलुरु गांधीनगर द्वारा फिट युवा हिट युवा अभियान के अंतर्गत प्रोजेक्ट फोकस शुभारंभ मुनि मोहजीत कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में हुआ। शुभारंभ सत्र में मुनि मोहजीत कुमार जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि योग केवल शरीर को स्वस्थ रखने का माध्यम नहीं, बल्कि मन को शुद्ध और आत्मा को उन्नत करने का सशक्त साधन है। स्वस्थ व्यक्ति से ही एक स्वस्थ समाज और सशक्त राष्ट्र का निर्माण संभव है।

गांधीनगर स्थित तेरापंथ भवन में आयोजित होने वाले इस साप्ताहिक कार्यक्रम हेतु परिषद् ने समाज के सभी वर्गों से इस स्वास्थ्य जागरूकता अभियान में जुड़ने की अपील की। कार्यक्रम में तेयुप बेंगलुरु अध्यक्ष विमल धारीवाल, पदाधिकारी, परिषद् सदस्य एवं श्रावक-श्राविका उपस्थित थे।

योगा फेस्टिवल व प्रेक्षा ध्यान का आयोजन

अहमदाबाद। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में फिट युवा हिट युवा के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद अहमदाबाद, तेरापंथ सेवा समाज व प्रेक्षा वाहिनी शाहीबाग अहमदाबाद के संयुक्त तत्वावधान में सात दिवसीय योगा फेस्टिवल व प्रेक्षा ध्यान का आगाज हुआ। प्रथम दिन योग प्रशिक्षक सोहन भरसारिया ने सभी को योगासन और प्राणायाम के विशेष प्रयोग करवाए। कार्यक्रम के समापन में मुनि मदनकुमार जी प्रेक्षा ध्यान के प्रयोग करवाए। तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष पंकज घीया ने मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की एवं योग प्रशिषक्षक सोहन भरसारिया और पधारे सभी श्रावक समाज का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का कुशल संयोजन, त्रिपदी वंदना व सूचना प्रेक्षा प्रशिक्षक जवेरीलाल संकलेचा ने दी। इस कार्यक्रम में फिट युवा हिट युवा के गुजरात राज्य प्रभारी कुलदीप नवलखा, तेरापंथ सेवा समाज के ट्रस्टी मंत्री दिनेश बालड़ और तेयुप अहमदाबाद प्रबंध मंडल की विशेष उपस्थिति रही। कार्यक्रम को सफल बनाने में तेरापंथ किशोर मंडल की सहभागिता एवं सभी संयोजकों का सराहनीय श्रम रहा।

वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन

राउरकेला। अभातेममं के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल राउरकेला द्वारा कार्यशाला का आयोजन किया गया। वाद-विवाद प्रतियोगिता का विषय 'आधुनिक जीवन शैली और पारिवारिक संस्कार, सह अस्तित्व या संघर्ष' था। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार मंत्र के उच्चारण से किया गया। तत्पश्चात मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण किया गया। अध्यक्ष तरुलता जैन ने सभी का स्वागत किया तथा सभी प्रतियोगियों को शुभकामनाएं देते हुए अपने भाव व्यक्त किए। मधु गोलछा तथा रंजीता कोठारी ने निर्णायक की भूमिका निभाई। प्रथम स्थान पर प्रेरणा जैन, द्वितीय स्थान पर संगीता दुगड रही। मंडल द्वारा सभी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया तथा फरवरी माह तक के सभी कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन ज्योति भंसाली ने किया। आभार ज्ञापन सहमंत्री सीमा जैन ने किया।

संक्षिप्त खबर

भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

धुबड़ी। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद्, धुबड़ी द्वारा को मुनि डॉ. ज्ञानेंद्र कुमार जी के सान्निध्य में भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन स्थानीय तेरापंथ भवन में किया गया। विजय गीत एवं श्रावक निष्ठापत्र के वाचन के पश्चात् तेयुप धुबड़ी के अध्यक्ष बजरंग कुंडलिया ने अपने स्वागत वक्तव्य में संपूर्ण समाज का स्वागत एवं अभिनंदन किया।

कार्यशाला में मुनि डॉ. ज्ञानेंद्र कुमार जी ने विस्तृत रूप में भिक्षु विचार दर्शन की मूल बातों से श्रावक समाज को अवगत कराया।

इस कार्यशाला में कुल 66 संभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में तेयुप धुबड़ी के साथी गण, विभिन्न सभा-संस्थाओं के पदाधिकारी गण, समाज के गणमान्य व्यक्तियों की एवं संभागियों की गरिमामय उपस्थिति रही।

प्रेरणा गीत का काव्यपाठ प्रतियोगिता का आयोजन

मदुरै। तेरापंथ महिला मंडल मदुरै के तत्वावधान में स्थानीय तेरापंथ भवन में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार स्वरधारा-प्रेरणा गीत का काव्यपाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

मंडल की बहनों के द्वारा प्रेरणा गीत से कार्यक्रम की शुरुआत की गई। कुल 6 प्रतियोगियों ने भाग लिया जिसमें प्रथम स्थान पर मधु पारख रही। निर्णायक की भूमिका चंदादेवी आंचलिया और सपना गोलछा ने निभाई। कार्यक्रम का संयोजन अध्यक्ष लता कोठारी ने किया।

समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत उड़ान कार्यशाला का आयोजन

कांटाबांजी। एक कदम स्वावलंबन की ओर के तहत् त्रैमासिक कार्यशाला 'ग्राफ़िक डिज़ाइन' का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल कांटाबांजी द्वारा सात दिवसीय कार्यशाला का आयोजन स्थानीय तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यशाला की शुरुआत नमस्कार मंत्र से की गई तत्पश्चात् प्रेरणा गीत का संगान किया गया।

महिला मंडल अध्यक्षा आशा जैन ने सबका स्वागत किया। कार्यशाला के दौरान ट्रेनर कौशल जिंदल ने ग्राफ़िक डिजाइनिंग, बिज़नेस ब्रांडिंग, डिजिटल मार्केटिंग आदि के बारे में प्रशिक्षण प्रदान किया। कार्यशाला का लाभ लगभग 50 सदस्यों ने लिया। मंडल द्वारा ट्रेनर कौशल जिंदल का सम्मान किया गया। मंत्री रितु जैन ने आभार ज्ञापन किया।

जो व्यक्ति भाग्य भरोसे बैठ जाता है, पुरुषार्थ नहीं करता, मेरी दृष्टि में वह दुनिया का अभागा व्यक्ति है। – आचार्य श्री महाश्रमण

युवा वाहिनी के अंतर्गत सेवा के साथ पायी विभिन्न प्रेरणा

राजाजीनगर।

आचार्य श्री महाश्रमणजी के श्रीचरणों में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में युवा वाहिनी के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर अध्यक्ष कमलेश चौरड़िया के नेतृत्व में तेयुप सदस्य उपस्थित हुए। युवा साथियों द्वारा त्रि-दिवसीय सेवा-उपासना के अंतर्गत आचार्य श्री महाश्रमणजी ने विशेष कृपा बरसाते हुए प्रतिदिन सामायिक एवं तेरापंथ सभा भवन में शानिवारिक सामयिक एवं आध्यात्मिक गतिविधि करने की प्रेरणा प्रदान करवाई। तेयुप अध्यक्ष कमलेश चौरड़िया ने तेयुप द्वारा क्रियान्वित विभिन्न गतिविधियों के बारे जानकारी प्रदान की। मुख्य मुनिमहावीर कुमार जी की सेवा-उपासना के तहत तेरापंथ धर्म संघ की विशेषताएं एवं भाव पूजा पर विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किया। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने आचार्य श्री भिक्षु त्रि-शताब्दी वर्ष के तहत स्वामीजी के इतिहास को पढ़ने की प्रेरणा प्रदान की। साध्वीवर्या संबुद्धयशा जी ने तेरापंथ के इतिहास को जानने एवं स्वाध्याय करने की प्रेरणा दी। मुनि दिनेश कुमार जी ने रात्रिकालीन विशेष कक्षा में युवा वाहिनी सेवार्थियों को नमस्कार महामंत्र के पांच पदों एवं आचार्य की अष्ट संपदाओं से अवगत करवाया। तेयुप राजाजीनगर की विशेष सेवा के अंतर्गत युवाओं को तीन मुख्य बिंदु व्यक्तिगत साधना, संगठन एवं धर्म संघ एवं सार्वजनकि कल्याण और विभिन्न जिज्ञासाओं का समाधान किया। त्रि-दिवसीय सेवा के अंतर्गत साथियों ने सभी साधु-साध्वियों की सेवा उपासना का लाभ लिया। गांधीधाम में विराजित तेयुप पर्यवेक्षक मुनि योगश कुमार जी की भी सेवा उपासना हुई। मुनिश्री ने प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा आचार्य श्री भिक्षु की त्रि-शताब्दी वर्ष पर तेयुप द्वारा 'जानो भिक्षु को' के अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए। एटीडीसी एवं मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव आदि अनेक आयामों पर चर्चा की गई। तेयुप अध्यक्ष कमलेश चौरड़िया के नेतृत्व में अभातेयुप द्वारा संचालित चौका सत्कार में भी सेवाएं प्रदान की गई। इस अवसर पर वर्तमान एवं निवर्तमान पदाधिकारी, कार्यसमिति सदस्य एवं किशोर मंडल सदस्यों की उपस्थिति रही। तेयुप राजाजीनगर ने कुल 6 दिन में दो ग्रुप में आचार्य प्रवर एवं चरित्रात्माओं की लगभग 60 किमी रास्ते की सेवा की।

प्रधान कार्यालय का भव्य उद्घाटन

रायपुर।

छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में भगवान महावीर का जन्म कल्याणक महोत्सव बड़े धूमधाम से विभिन्न आयोजनों का समावेश करते हुए 16 दिवसीय आयोजन रायपुर सकल जैन समाज द्वारा भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव समिति के अंतर्गत किया जाता है। भगवान महावीर जन्मकल्याणक महोत्सव समिति - 2025 के गठन एवं जन्म कल्याणक की गतिविधियों के संचालन व रुपरेखा निर्धारण हेतु प्रधान कार्यालय का उद्घाटन विशेष रूप से तेरापंथ युवक परिषद्, रायपुर के संयोजन में जैन संस्कार विधि से पूर्व कैबिनेट मंत्री व रायपुर पश्चिम विधायक राजेश मूणत के कर-कमलों द्वारा श्री ऋषभ देव जैन मंदिर सदर बाजार, रायपुर में किया गया। इस अवसर पर भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव समिति के अध्यक्ष महावीर कोचर महासचिव सिध्दार्थ डागा, कोषाध्यक्ष वीरेंद्र डागा, रायपुर नगर निगम की नवनिर्वाचित पार्षद कृतिका जैन, पूर्व पार्षद सतीश जैन, यशवंत जैन, चन्द्रेश शाह, महेन्द्र कोचर, विजय चोपड़ा, गुलाब दस्सानी के साथ सकल जैन समाज के सभी घटकों के ट्रस्टी/अध्यक्ष, समाज प्रमुखों के साथ तेयुप, रायपुर के सदस्यों की गरिमामय उपस्थिति रही। संस्कारक अनिल दुगड़ व सूर्य प्रकाश बैद ने संपूर्ण विधि मंत्रोच्चार करते हुए जैन संस्कार विधि संपन्न कराई। मुख्य अतिथि राजेश मूणत ने कहा कि जैन समाज देने वाला समाज है। हमें जन्म कल्याणक के माध्यम से सर्व समाज के सामने उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करने का प्रयास कर अनुकरणीय कार्य संपादित करते हुए 'हम' की भावना से कार्य करना चाहिए।

पृष्ठ 1 का शेष

व्यवहार में रहे निरहंकारिता

इस प्रवास के दौरान हमें आध्यात्मिक लाभ उठाने का प्रयास करना चाहिए और उत्तम संस्कारों को आत्मसात करना चाहिए। इस अवसर पर साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि गुरु भी गुड़ के समान त्रिदोष नाशक होते हैं। ये तीन दोष हैं—अज्ञान, अनास्था और अनाचार। आचार्यश्री गांधीधाम के लोगों के इन तीन दोषों को दूर करने के लिए पधारे हैं। जो श्रद्धा-सम्पन्न होता है, वही सच्चा ज्ञान प्राप्त करता है। ज्ञान केवल उत्तम गुरु से ही मिलता है, क्योंकि वे हमारी ज्ञान चेतना को जागृत करने वाले होते हैं। कार्यक्रम में स्थानीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अशोक सिंघवी तथा बृहद् जैन समाज की ओर से चंपालाल परीख ने अपने उद्गार व्यक्त किए। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति दी। तेरापंथ महिला मंडल की सदस्याओं ने स्वागत गीत का संगान किया। तेरापंथ युवक परिषद के सदस्यों ने भी स्वागत गीत का संगान किया। आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में उपस्थित गुजरात सरकार के पूर्व मंत्री वासनभाई अहीर ने भी आचार्यश्री के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी और आचार्यश्री से मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

वैर से नहीं समता और

जैसे कोई व्यक्ति उल्टी करता है, तो हम भी उसे देखकर उल्टी न करने लगें, उसी प्रकार हमें नकारात्मकता को ग्रहण नहीं करना चाहिए। गृहस्थ जीवन में भी समता और शांति बनी रहनी चाहिए, क्योंकि यही एक अच्छी आत्मा के लिए श्रेष्ठ मार्ग है। पूज्यवर के स्वागत में भद्रेश्वर तीर्थ की ओर से प्रवीण भाई शाह ने अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त कीं। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

बोलती किताब

आओ हम जीना सीखें

जीवन जीने की कला - जीवन का प्रारंभ जन्म है और अंत मृत्यु। जीवन आत्मा और शरीर के संयोग से ही संभव है। केवल जीना कोई बड़ी बात नहीं, महत्वपूर्ण है कलात्मक जीवन जीना। सच्चा कलात्मक जीवन वही है जो धर्म और कौशल से प्रेरित हो। व्यक्ति अनेक कलाओं में निपुण हो सकता है, लेकिन जीवन जीने की सच्ची कला — धर्म और नैतिकता — सीखना सबसे आवश्यक है।

आत्मदर्शन की प्रक्रिया - आदमी प्रायः दूसरों के दोष देखने में अधिक रुचि लेता है, जबकि अपनी दुर्बलताओं को छिपाने का प्रयास करता है। सच्चा आत्मदर्शन तब होता है जब व्यक्ति अपने सुधार और परिष्कार पर ध्यान केंद्रित करे। हर छोटी-बड़ी भूल के प्रति सजग रहे, उसे दोहराने से बचे, और अपने आचरण के प्रति स्वयं उत्तरदायी बने। यही आत्मदर्शन की प्रक्रिया है, जो जीवन को उज्ज्वल और सन्तुलित बना सकती है।

जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि - मनुष्य दुनिया का श्रेष्ठ प्राणी है, जिसकी पांच इंद्रियां हैं — आंख, नाक, कान, जिह्वा और त्वचा। इनसे वह देखता, सूंघता, सुनता, चखता और स्पर्श करता है। इन इंद्रियों से प्राप्त अनुभवों पर मन चिन्तन करता है। सभी इंद्रियों में आंख का विशेष महत्त्व है, क्योंकि बिना आंखों के संसार सूना लगता है। जिनके पास दृष्टि नहीं होती, उन्हें अंधा या प्रज्ञाचक्षु कहा जाता है। वास्तव में, हमारी दृष्टि ही हमारी सृष्टि का निर्माण करती है।

दृष्टि का मूल्य - किसी भी क्रिया की निष्पत्ति के पीछे दृष्टिकोण बहुत बड़ा निमित्त बनता है। बिल्ली अपने बच्चे को भी पकड़ती है और चूहे को भी पकड़ती है पर दोनों की पकड़ में बहुत बड़ा अन्तर होता है। बच्चे के प्रति ममता का भाव है, चूहे के प्रति क्रूरता का। बच्चे को बचा लेती है। चूहों को मार देती है। अन्तर्दृष्टि का अन्तर है। दृष्टि में अन्तर आते ही परिणाम में अन्तर आ जाता है। एक शल्यचिकित्सक भी पेट को औजार से चीरता है और एक डाकू भी पेट को छूरा भोंककर चीरता है। पेट को चीरने की क्रिया एक होने पर भी दृष्टि की समानता नहीं है। डॉक्टर की दृष्टि व्यक्ति को जीवनदान देने पर टिकी है। डाकू की दृष्टि जीवन को लूटने पर टिकी है। दृष्टि में बदलाव आते ही सब कुछ बदल जाता है।

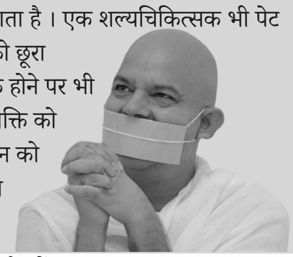

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 | https://books.jvbharati.org | books@jvbharati.org

सप्तदिवसीय योग शिविर का हुआ समापन

राजाजीनगर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा निर्देशित फिट युवा हिट युवा के प्रोजेक्ट फोकस के अन्तर्गत तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा प्रथम दिवस स्थानीय धोबी घाट पार्क में खुले आसमान के नीचे एवं द्वितीय दिवस से तेरापंथ सभा भवन में सकल समाज के सहयोग से तेयुप अध्यक्ष कमलेश चौरड़िया के नेतृत्व में योग शिविर का समायोजन किया गया। शिविर में प्रथम दिवस प्रेक्षा प्रशिक्षक रेणु कोठारी द्वारा एवं बाकी के छः दिन योग प्रशिक्षक उत्तमचंद गन्ना द्वारा कायोत्सर्ग, महाप्राण ध्वनि का प्रयोग, सूर्य नमस्कार, भुजंगासन, पर्वतासन आदि विभिन्न प्रकार के आसनों के द्वारा सप्तदिवसीय शिविर का समापन किया गया।

सप्तदिवसीय योग शिविर में उपस्थित सदस्यों की संख्या 32 रही। इस अवसर पर तेयुप सदस्यों, किशोर मण्डल सदस्य, सभा परिवार, महिला मण्डल सदस्यों आदि की उपस्थिति रही।

आत्मा को बनाएं सदात्मा और महात्मा : आचार्यश्री महाश्रमण

बिदड़ा।
25 फरवरी, 2025

संयम के सुमेरू आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ बिदड़ा के मानव मंदिर प्रांगण में पधारे। अमृत देशना प्रदान करते हुए पूज्यवर ने कहा कि आत्मा के चार प्रकार होते हैं—परमात्मा, महात्मा, सदात्मा और दुरात्मा। परमात्मा वे होते हैं जो सिद्ध भगवान बन चुके होते हैं। अनंत सिद्ध आत्माएँ हैं, जिनका न शरीर होता है, न मन, न वाणी, न लेश्या और न योग।

तीर्थंकरों और केवलज्ञानियों को भी हम परमात्मा मान सकते हैं। जो साधु पुरुष होते हैं, वे महात्मा होते हैं, क्योंकि वे साधनाशील होते हैं। सज्जन आत्माएँ सदात्मा होती हैं। वहीं, जो मिथ्या दृष्टि रखते हैं और हिंसा, लूटपाट तथा अठारह पापों में संलग्न रहते हैं, वे दुरात्मा कहलाते हैं। शास्त्रों में उल्लेख किया गया है कि दुरात्मा जितनी पीड़ा देता है, उतनी तो शत्रु भी नहीं देते।

दुरात्मा अपने कर्मों के कारण नरक और अन्य दुर्गति स्थानों में भ्रमण करता है। इसलिए हमें दुरात्मा बनने से बचना चाहिए। सभी को सदाचारपूर्ण जीवन जीना चाहिए और दुर्जनता से मुक्त रहना चाहिए। यदि किसी दुर्जन के पास

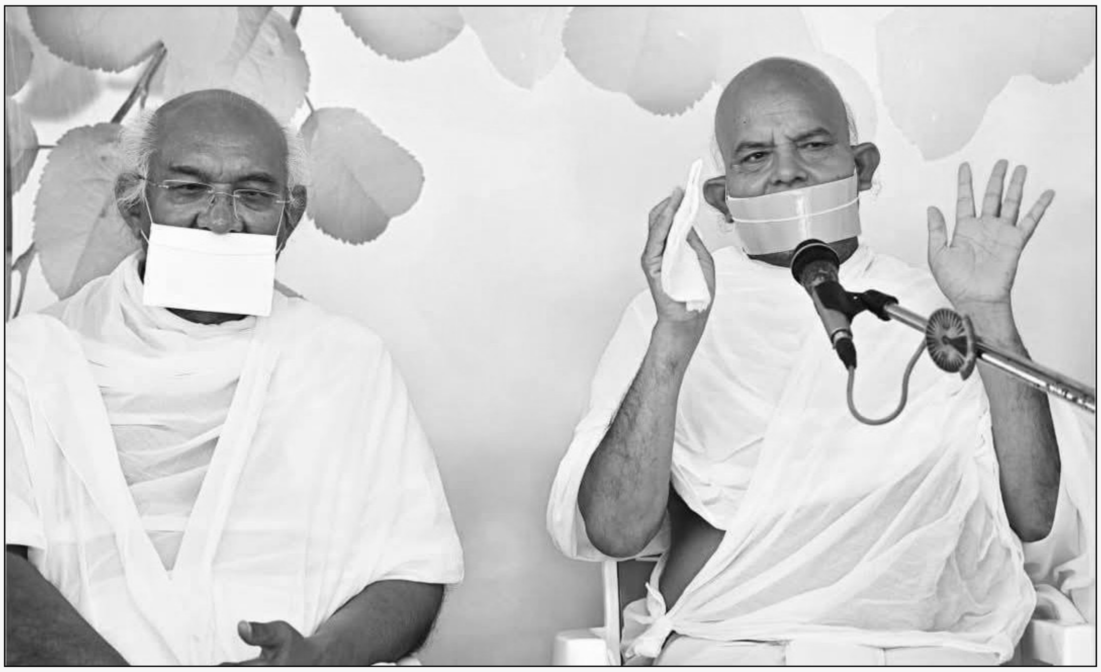

विद्या होती है, तो वह उसे व्यर्थ विवाद में लगाता है, जबकि सज्जन व्यक्ति विद्या का उपयोग संवाद और ज्ञान के विकास के लिए करता है। यदि सज्जन के पास धन होता है, तो वह उसे दान कर समाज हित में लगाता है, जबकि दुर्जन धन का अहंकार करता है।

दुर्जन के पास यदि शक्ति होती है, तो वह दूसरों को प्रताड़ित करता है, जबकि सज्जन अपनी शक्ति का उपयोग सेवा और रक्षा के लिए करता है। धर्म का पालन करने वाला व्यक्ति सज्जनता से युक्त हो सकता है। धर्म दो प्रकार के होते हैं—उपासनात्मक और आचरणात्मक। व्यवहार में अहिंसा और सद्भावना बनाए रखनी चाहिए। उपासना के रूप में सामायिक, जप, त्याग आदि करना चाहिए।

गृहस्थ को भी धर्म का पालन करने का अधिकार है, लेकिन उसे अपने दायित्वों का निर्वाह करते हुए मोह और आसक्ति से बचना चाहिए। उसे सूखे मिट्टी के गोले की तरह अर्थात अनासक्त रहना चाहिए। सज्जन और दुर्जन के बीच अंतर केवल आचरण का होता है। जिसका स्वभाव बड़ा होता है, वही वास्तव में बड़ा व्यक्ति होता है। जिनका स्वभाव सहज रूप से दूसरों को अच्छा लगे, वे ही सच्चे सज्जन होते हैं। अणुव्रत आंदोलन सज्जनता को बढ़ावा देने का आंदोलन है। हमारी प्रवृत्ति वीतरागता की ओर होनी चाहिए।

साधु को विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए कि अशुभ योग उत्पन्न न हों। मोह-कर्म के प्रभाव से योग अशुभ हो सकते हैं। योगों में कषाय रूपी मल न मिल जाए, क्योंकि जब योग निर्मल होते हैं, तब निर्जरा संभव होती है। हमें अपनी आत्मा को उत्कृष्ट बनाना चाहिए और दुरात्मा बनने से बचना चाहिए।

आचार्यश्री ने आगे कहा कि कच्छ की यात्रा के दौरान आज यहां मानव मंदिर में आना हुआ है। कई दिनों पहले से दिनेशचन्द्रजी महाराज का नाम सुन रहा था। आज आपसे मिलना हो गया। अच्छी साधना, धर्म-ध्यान आदि चलता रहे।

कार्यक्रम में स्थानकवासी आठ कोटि मोटी पक्ष के मुनि दिनेशचंद्रजी एवं अनेक साध्वियाँ पूज्यवर की सन्निधि में पहुँचीं। मुनि दिनेशचंद्र जी ने कहा कि हमें अपनी आत्मा को संयम और साधना के मार्ग पर आगे बढ़ाना चाहिए। आत्मा की उन्नति कर हम सिद्ध गति को प्राप्त कर सकते हैं।

उन्होंने आचार्यश्री के स्वागत में कहा कि आज अपनी धवल सेना के साथ आचार्यश्री महाश्रमणजी का आगमन हुआ है। प्रेम, भावना और श्रद्धा भाव से आपका स्वागत करता हूं। आज आपने मानव मंदिर की धरा को धन्य कर दिया है।

मंगल प्रवचन के उपरान्त आचार्य प्रवर के स्वागत में भावेन भाई संघवी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

अकाम और शल्य रहित होने का करें प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

सामागोगा।
27 फरवरी, 2025

जन-जन के उद्धारक आचार्यश्री महाश्रमणजी कच्छ प्रान्त की यात्रा करते हुए सामागोगा स्थित श्री ओपी जिन्दल विद्या निकेतन में पधारे। अमृत देशना प्रदान कराते हुए पूज्य प्रवर ने फरमाया - शास्त्र में कहा गया है कि काम शल्य है, विष है। काम की कामना करने वाले दुर्गति को प्राप्त हो जाते हैं।

पांच इन्द्रियों के अपने-अपने विषय हैं, इनके प्रति आकर्षण, राग, कामनाएं हैं तो ये विषय अपने आप में शल्य की तरह नुकसान देने वाले बन सकते हैं। विष की तरह नाश करने वाले बन सकते हैं। कई व्यक्ति पदार्थों का भोग तो नहीं करते पर उन विषयों के प्रति लालसा है तो भी वे पतन की ओर गतिमान बन सकते हैं। पदार्थों के प्रति संयम रखना बड़ा ही महत्वपूर्ण होता है।

उत्तराध्ययन आगम में पांच इन्द्रियों के विषय में सुन्दर वर्णन किया गया है। साधु जीवन में जो रमण करने लग जाता है, भीतर में रमण करने लग जाता है, फिर पदार्थों के प्रति अनाकांक्षा हो सकती है। जैसे-जैसे उत्तम तत्व का बोध होता, उत्तम तत्व आत्मसात होते हैं तो सुलभ विषय के प्रति भी रूचि नहीं रहती है। पदार्थों के प्रति अनाकांक्षा और उत्तम तत्व का प्राप्त होना दोनों का परस्पर सम्बन्ध है।

साधु जीवन प्राप्त होना, अध्यात्म का प्राप्त हो जाना ऊंची बात हो जाती है। साधना में आत्मरमण हो जाये, भौतिक साधन उसको दूषित न कर सके ऐसी मजबूत स्थिति बन जाये। क्षयोपशम मजबूत होता है, तो कोई संयम रत्न को चुरा नहीं सकता।

दो दृष्टियों होती है - स्वास्थ्य की दृष्टि और अध्यात्म की दृष्टि। रात्रि भोजन न करना दोनों दृष्टियों से अच्छा है। यह अध्यात्म और विज्ञान की समानता की बात है। भगवान महावीर तो

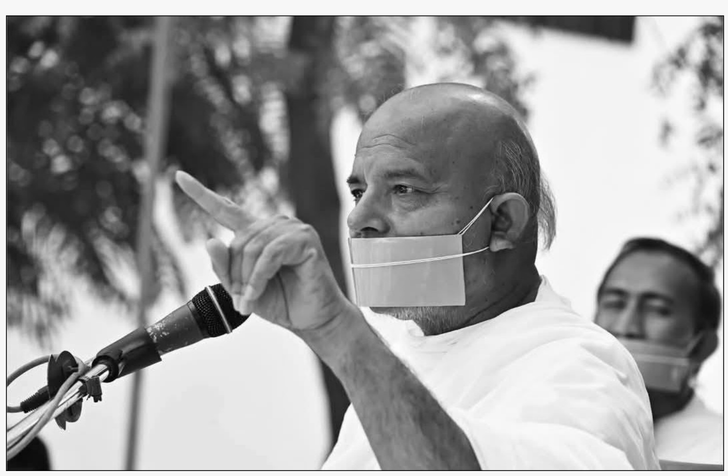

वैज्ञानिक नहीं सर्वज्ञानिक थे, सर्वज्ञ थे। मैं अध्यात्म और विज्ञान में असमानता भी देखता हूं। अध्यात्म का तो परम लक्ष्य मोक्ष पाना है, पर विज्ञान में ऐसी बात नहीं है। मोक्ष प्राप्ति के लिए तो सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक् चारित्र और सम्यक् तप की आराधना की बात है पर विज्ञान में ऐसी बात नहीं है। अध्यात्म में तो राग-द्वेष मुक्ति की साधना है पर विज्ञान में ऐसी बात नहीं है।

पूर्व की ओर चलने वाले राहगीर और पश्चिम की ओर चलने वाले राहगीर में भी कहीं कहीं मिलन हो सकता है। अध्यात्म के सिद्धान्तों को समझने में विज्ञान का सहयोग ले सकते हैं। विज्ञान को भी अध्यात्म के सहयोग से खोज करने में सहयोग मिल सकता है। दोनों में समानता-असमानता हो सकती है। हम अकाम और भीतर से भी शल्य रहित होने का प्रयास करें।

पूज्यप्रवर ने आगे फरमाया कि आज चतुर्दशी और अमावस्या का मिलन है, पक्खी भी है, हाजरी का भी प्रसंग है। आपस की चर्चाएं भी ज्ञान विकास में सामग्री देने में सहयोग दे सकती हैं। आज प्रातः चर्चा में मैंने समझाया था कि लौकिक और लोकात्तर उपकार को हम कैसे समझें ? आत्मा का उपकार लोकोत्तर उपकार है। शारीरिक और बाह्य उपकार लौकिक उपकार है। पूज्यवर ने हाजरी का वाचन कराते हुए प्रेरणाएं प्रदान करवायी। मुनि चन्द्रप्रभजी व मुनि कैवल्यकुमारजी ने आचार्यश्री की अनुज्ञा से लेखपत्र का वाचन किया। आचार्यश्री ने मुनिद्वय को 21 कल्याणक बक्सीस किए। उपस्थित चारित्रात्माओं ने अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर लेखपत्र का उच्चारण किया। विद्या निकेतन की ओर से संजय झा ने आचार्यश्री के स्वागत में अपनी अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
10 मार्च - 16 मार्च, 2025

हर व्यक्ति के जीवन में आए अणुव्रत : आचार्यश्री महाश्रमण

अणुव्रत अनुशास्ता की सन्निधि में आयोजित हुआ 77वां अणुव्रत स्थापना दिवस

लूणी।
01 मार्च, 2025

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ मुंद्रा से लगभग 9 किलोमीटर का विहार कर लूणी, कच्छ पधारे। आज से लगभग 76 वर्ष पूर्व, आचार्यश्री तुलसी ने इसी दिन अणुव्रत आंदोलन का शुभारंभ किया था। इस पावन अवसर पर अणुव्रत अनुशास्ता ने फरमाया कि आज फाल्गुन शुक्ल द्वितीया है, जो परमपूज्य आचार्य कालूगणी का जन्म दिवस भी है।

तेरापंथ धर्मसंघ की आचार्य परंपरा में आचार्यश्री भिक्षु के उत्तरवर्ती अष्टम आचार्य परमपूज्य कालूगणी हुए। उनका संपूर्ण जीवन मात्र 60 वर्षों का था। आचार्यश्री तुलसी का जन्म दिवस कार्तिक शुक्ल द्वितीया को होता है। आचार्यश्री कालूगणी के दो शिष्य—मुनि तुलसी और मुनि नथमलजी—क्रमशः तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य बने और दोनों ही युगप्रधान आचार्य हुए।

आचार्य श्री कालूगणी का आचार्यकाल 27 वर्षों तक रहा। जब उनकी जन्मशताब्दी का समय आया, तब आचार्यश्री तुलसी छापर में विराजमान थे। उन्होंने मघवागणी की कृपा प्राप्त की थी। डालगणी ने प्रच्छन्न रूप से उन्हें आचार्य पद प्रदान किया, इसलिए वे प्रकट रूप से युवाचार्य नहीं रहे। मात्र 33 वर्ष की आयु में वे तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य बने।

आचार्य कालूगणी ने राजस्थान के बाहर एक चातुर्मास और एक मर्यादा महोत्सव किया था, शेष जीवन वे राजस्थान में ही रहे। उन्होंने हरियाणा और मालवा की यात्राएँ भी कीं। संस्कृत भाषा का प्रसार उनका एक महत्वपूर्ण योगदान था। उनके द्वारा दीक्षित अनेक साधु-साध्वियाँ संस्कृत भाषा के विद्वान बने। आज के ही दिन, विक्रम संवत 2005 में, आचार्यश्री तुलसी ने सरदारशहर में अणुव्रत आंदोलन का शुभारंभ किया था। यह दिन पारमार्थिक शिक्षण संस्था की स्थापना का भी दिन है। आचार्यश्री तुलसी ने तेरापंथ धर्मसंघ को अनेक महत्वपूर्ण अवदान प्रदान किए, जिनमें अणुव्रत आंदोलन प्रमुख है। आचार्यश्री भिक्षु का यह कथन—₹मिथ्यात्वी की धार्मिक करणी भी मोक्ष की आराधिका होती है₹— अणुव्रत आंदोलन की आधारशिला बना। यह केवल जैन अनुयायियों तक सीमित नहीं है, बल्कि जैन-अजैन सभी इसे अपना सकते हैं।

गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत के प्रचार के लिए अनेक लंबी यात्राएँ कीं, जिनमें कच्छ की यात्रा भी शामिल थी। अणुव्रत की स्थापना के पश्चात इस दिशा में कई संस्थाएँ भी स्थापित की गईं। अणुविभा (अणुव्रत विश्व भारती) तो बाद में अस्तित्व में आई, लेकिन वर्तमान में सभी अणुव्रत संस्थाएँ अणुविभा में समाहित हो चुकी हैं।

अणुव्रत के विभिन्न केंद्रों पर आचार्यों के चातुर्मास हुए हैं। प्रति वर्ष व्यापक स्तर पर 'अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह' का आयोजन किया जाता है। अणुव्रत धर्म स्थानों पर ही नहीं बल्कि जेलों में जाएं, बाजारों पर, चौराहों तक जाएं, दुकान, ऑफिस, विद्यालयों में भी अणुव्रत पहुंचे। अणुव्रत हर व्यक्ति के जीवन में आ जाए तो वह सब जगह आ जाएगा। अहिंसा, संयम और तप का प्रभाव व्यक्ति और समाज—दोनों के जीवन में स्थायित्व ला सकता है।

कार्यक्रम में अणुविभा के अध्यक्ष प्रताप दूगड़, महामंत्री मनोज सिंघवी ने अपने विचार व्यक्त किए। अणुविभा टीम द्वारा गीत का संगान किया गया। महाजन वाडी भवन की ओर से नितिन केडिया ने पूज्य प्रवर का स्वागत किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

आचार्य श्री महाश्रमणजी और स्थानक वासी आठ कोटि मोटी पक्ष के मुनि दिनेशचंद्र जी का हुआ आध्यात्मिक मिलन

पूज्य प्रवर से शुभाशीष प्राप्त करते पूर्वी कच्छ के पुलिस अधीक्षक सागर बाघमार और अन्य पुलिसकर्मी

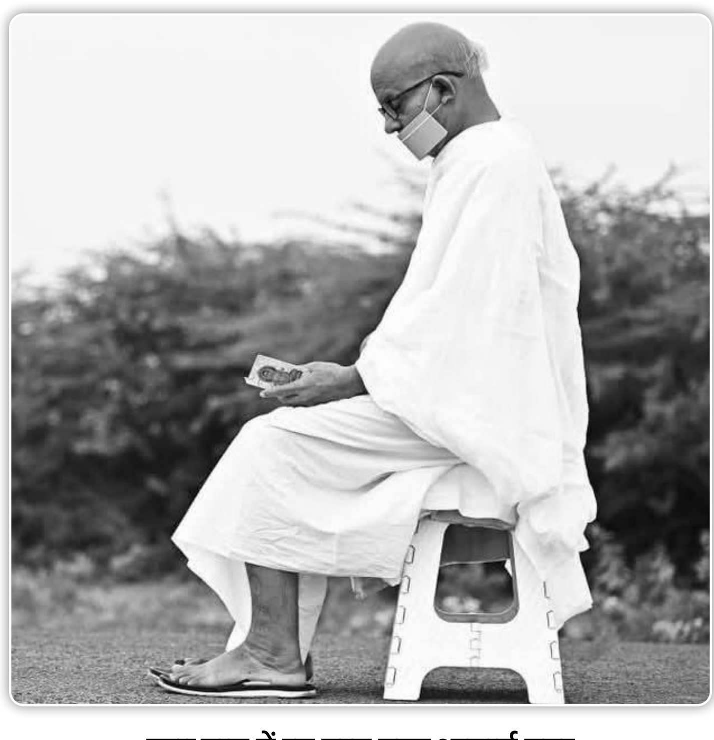

स्वाध्याय में रत परम पूज्य आचार्य प्रवर

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।